परमपिता शिव परमात्मा
गीता - ज्ञान - दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 53, अंक 5, नवम्बर, 2017
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

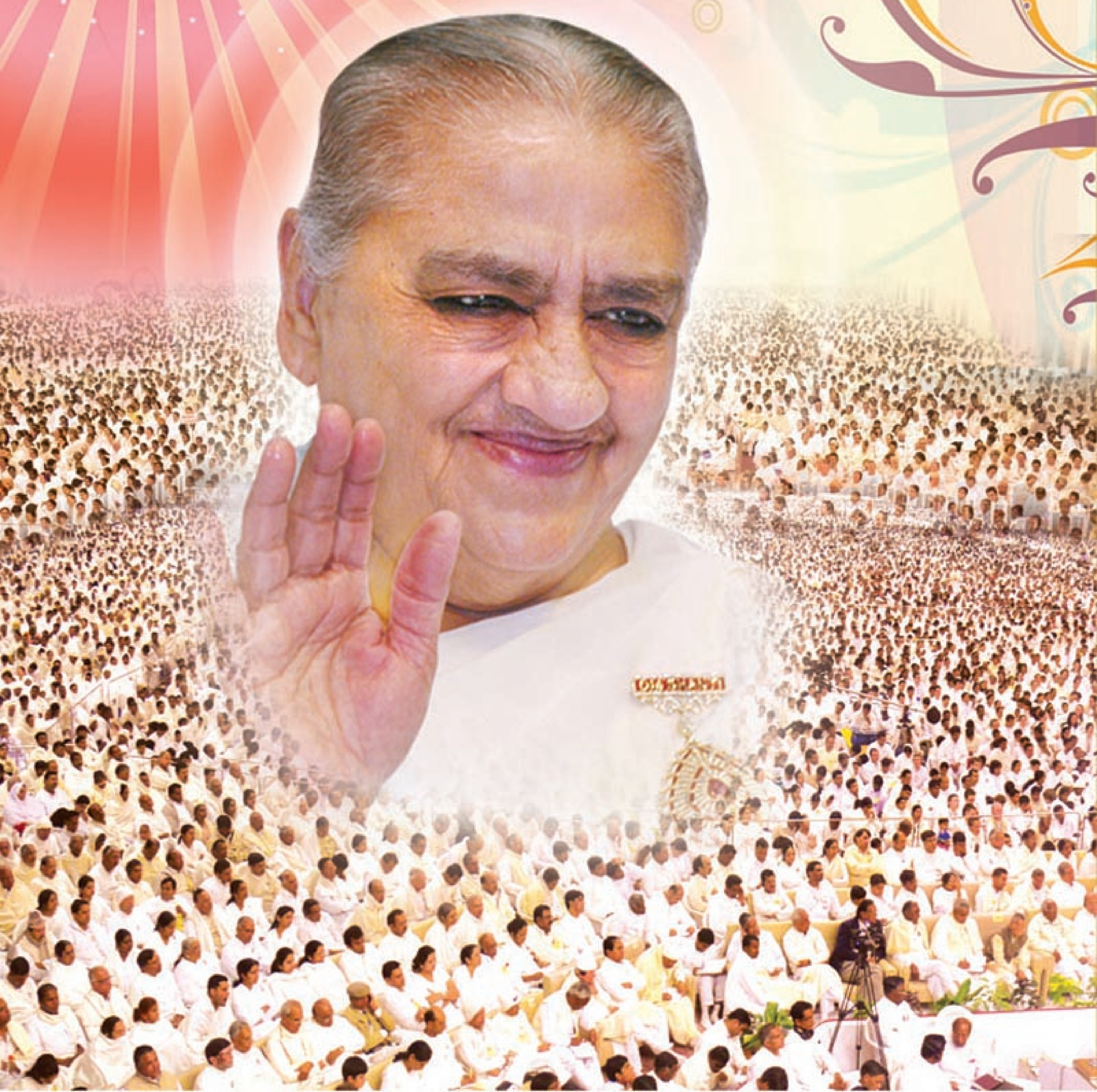

1.तलेगाँव दाभाडे (पुणे) - 'सुख-शान्ति-समृद्धि का मार्ग सहज राजयोग' विषयक कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.लाजवंती बहन, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.प्रभा बहन, आमदार भ्राता संजय भेगडे, नगराध्यक्षा बहन चित्राताई जगनाडे तथा अन्य। **2.अजमेर (धोलाभाटा)**- राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.योगिनी बहन। **3.पणजी (गोवा)**- युवा संस्थान तथा ब्रह्माकुमारीज द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान कार्यक्रम में गोवा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर पर्रिकर, ब्र.कु.शोभा बहन तथा अन्य सहयोगीगण ईश्वरीय स्मृति में। **4.भोपाल (रिवेरा टाउनशिप)**- चैतन्य देवियों की झांकी में पधारे मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.तृष्णा बहन। **5. रुद्रपुर** : उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता त्रिवेन्द्र सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सूर्यमुखी बहन। **6.मिरज़ापुर**- पावरलिफ्टिंग की अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी स्वर्ण पदक विजेता बहन निधि पटेल को शॉल ओढ़ाकर व शील्ड देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.बिन्दु बहन। **7.विजयवाड़ा (सीतारामपुरम)**- तीरंदाजी में अर्जुन अवार्डी ब्र.कु.ज्योति बहन को सम्मानित करते हुए ब्र.कु.भारती बहन तथा अन्य बहनें। **8.आगरा (ईदगाह)**- 'सेलीब्रेटिंग लाइफ' विषयक कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, एस.सी./एस.टी.आयोग अध्यक्ष तथा सांसद भ्राता रामशंकर कठेरिया,ब्र.कु.शीला बहन तथा ब्र.कु.अश्विना बहन।

संजय की कलम से

विकर्मों को दग्ध करने का उपाय

पिछले विकर्मों को दग्ध करने का एक ही उपाय है और वह है – सहज राजयोग। इसलिए गीता के भगवान ने वेद-अध्ययन, दान-पुण्य, जप-तीर्थ आदि को अयथार्थ कहकर राजयोग को ही विकर्म विनाश का एकमात्र सही साधन बताया है। यह योग स्वयं परमात्मा ही कल्पांत (कलियुग के अन्त) के समय साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सिखाते हैं (और वर्तमान समय पुन: सिखा रहे हैं)। यह तो सभी जानते हैं कि आत्मा शरीर के द्वारा ही कर्म करती है और वह अपने किए हुए कर्मों का सुख अथवा दुख रूपी फल भी शरीर के द्वारा ही भोगती है। ऐसा नहीं है कि हर मनुष्य के कन्धों पर कोई दूत बैठे रहते हैं जो कि उसके कर्मों का हिसाब-किताब लिखते रहते हैं अथवा ऐसे कोई दूत ऊपर ईश्वर के दरबार (अथवा धर्मराजपुरी) में यह कार्य करते हैं।

वास्तव में मनुष्यात्माओं के कार्य करने तथा फल भोगने का विधान साधन उनकी आत्मा में ही निहित रहता है। जब कोई मनुष्य अच्छा अथवा बुरा कर्म करता है तो तुरन्त ही उसका प्रभाव, छाप अथवा असर आत्मा में 'संस्कार' रूप में भर जाता है। ये संस्कार ही उसके अगले कर्मों के संकल्पों को प्रेरित करते हैं और यही मनुष्यात्मा के साथ अगले जन्म में भी चलते हैं। यह कहना अयथार्थ है कि आत्मा निर्लेप है और उस पर अच्छे तथा बुरे कर्मों का लेप-विक्षेप नहीं पड़ता। वास्तव में इन संस्कारों के अनुसार ही मनुष्य को जन्म, शरीर, आयु, सम्पत्ति, परिवार इत्यादि मिलते हैं। यही संस्कार उसको अच्छे कर्मों का सुख और बुरे कर्मों का दुख रूपी फल दिलवाने के निमित्त बनते हैं। विकर्मों की सजा से छूटने के लिये पुराने बुरे संस्कारों को भस्म करना जरूरी है। इसके लिए आत्मिक शक्ति की आवश्यकता है जो केवल सर्वशक्तिवान पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव से बुद्धियोग लगाकर ही प्राप्त की जा सकती है।

जैसे सूर्य की किरणों को 'लेन्स' द्वारा एकत्रित करके अग्नि उत्पन्न करते हैं वैसे ही ज्ञान सूर्य परमात्मा से बुद्धि की तार जोड़कर ही योगाग्नि प्रज्वलित की जा सकती है जिससे कि पुराने अशुद्ध संस्कार भस्मीभूत हो जावें। इस योग से मनुष्यात्मा की देह और देह के सम्बन्धों की जंजीरें टूट जाती हैं और वह विकर्मों की सजा से मुक्ति पा लेती है। यह राजयोग निरन्तर लगाया जा सकता है परन्तु इसके लिये परमपिता परमात्मा के स्वरूप, धाम, गुणों एवं कर्त्तव्यों का परिचय तथा उनसे बुद्धियोग जोड़ने की विधि का ज्ञान आवश्यक है जो व्यक्तिगत सम्पर्क से प्राप्त किया जा सकता है। ❖

अमृत-सूची

❖ मन ही शत्रु, मन ही (संपादकीय)..4
❖ श्रद्धांजलि......................6
❖ पत्र संपादक के नाम........... 7
❖ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के....8
❖ परिस्थिति रूपी अंगारों की.....10
❖ कीमो की किरणें लगती थी ...12
❖ आत्म-स्थित होकर रहने 13
❖ आइये, स्वयं को बदलें 14
❖ त्याग व सेवा की मूरत माता 16
❖ बोझ समाप्त कर उड़ाने वाले ...18
❖ राजयोग से होती हैं समस्याएँ ...19
❖ नारी का सर्वांगीण विकास.....20
❖ साक्षी बनें, निर्णायक नहीं 22
❖ पति परमेश्वर या परमेश्वर.......23
❖ राजयोग से बनते हैं रॉयल 24
❖ प्रकृति के किराये की किश्तें 25
❖ बन्धन से छुटकारा 26
❖ साइबर क्राइम और कर्मों की....27
❖ तेरी मुरली में है अद्‌भुत जादू ..28
❖ ज्वालास्वरूप योग अवस्था 29
❖ श्रद्धांजलि.....................31
❖ सचित्र समाचार............... 32
❖ क्षमाशीलता 34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
: omshantipress@bkivv.org

सम्पादकीय ..

मन ही शत्रु, मन ही मित्र

नीतिकारों ने कहा है, 'मन एव बन्धन, मोक्ष कारणम्' अर्थात् मानव के बन्धन या मुक्ति का कारण उसका अपना मन है। जैसे पानी में मिट्टी मिल जाने से कीचड़ हो जाता है फिर उस कीचड़ की सफाई भी पानी से ही होती है। कीचड़ होने का कारण भी पानी है और धुलने का कारण भी पानी है, उसी प्रकार मानव के गिरने का कारण भी मन है और उठने का कारण भी मन है। मन जब विषय-विकारों का चिन्तन करता है तो जीवन नीचे गिरता जाता है परन्तु जब ईश्वर-चिन्तन करने लगता है तो जीवन ऊपर उठता जाता है।

आध्यात्मिकता मन को धोने और मांजने का तरीका सिखाती है। जो भीतर से मंज जाएगा, बाहर उसका सब ठीक हो जाएगा। जो भीतर से व्यवस्थित है उसकी जिन्दगी बाहर से स्वत: व्यवस्थित हो जाती है और जो भीतर से विचारों में अस्त-व्यस्त है उसकी हर प्रक्रिया बाहर से भी अस्त-व्यस्त हो जाती है।

बदलना है बीज को

अगर हम करेले को मीठा बनाना चाहें तो क्या करेंगे? उसके पत्ते, तना, फूल बदलेंगे या बीज बदलेंगे? अवश्य ही बीज ही बदलेंगे। बीज में मिठास वाले तत्व (ingrediants) डाल देंगे। अगली बार इस बीज से जो करेला उगेगा वह कड़वा नहीं होगा। अत: लम्बी-चौड़ी बेल के बदले मात्र छोटा-सा बीज बदलने से काम हो जाएगा।

मानव जीवन का बीज है विचार

मानव जीवन का बीज क्या है? विचार ही मानव-जीवन का बीज है। जैसे ईंट-ईंट से भवन बनता है, उसी प्रकार एक-एक विचार से जीवन बनता है। अगर ईंट कमजोर है, कच्ची है तो भवन कैसा बनेगा? एक झटके के साथ गिर जाएगा। इसी प्रकार जिसके मन के विचार नकारात्मक और गन्दे हैं, समझ लीजिए, उसके जीवन रूपी भवन की ईंटें भी बड़ी कमजोर हैं। छोटी-सी परिस्थिति आई, थोड़ा-सा विरोध हुआ तो उसका भी जीवन डगमगा जाएगा।

प्रश्न यह है कि विचारों को शक्तिशाली बनाने के लिए क्या करना पड़ेगा? इसके लिए अपने मन के विचारों के सशक्तिकरण की विधि सीखनी होगी। हर छोटी-बड़ी बात सीखने से ही जीवन में आ पाती है। अत: मन को श्रेष्ठ, शान्त, महान बनाने के लिए प्रशिक्षण चाहिए जो आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के द्वारा ब्रह्माकुमारीज की हर शाखा में दिया जाता है।

मन का मन द्वारा सुधार

मन को मन के द्वारा ही सुधारना है। हम अनाज बीनते हैं तो कैसे एक-एक दाने को ध्यान से देखते हैं, उनमें मिले कंकरों को पहचानते हैं और फिर उन्हें बाहर निकाल फेंकते हैं। जब कपड़े धोते हैं तो पूरे कपड़े को फैलाकर उसका एक-एक दाग ढूँढ़ते हैं और फिर किसी केमिकल के सहयोग से रगड़-रगड़ कर उसे मिटा डालते हैं। सफाई की यही प्रक्रिया है। पहले ध्यान से देखो, पहचानो, फिर उन्मूलन करो। मन को मित्र बनाने के लिए भी इसके संकल्पों को देखो, उनको परखो, पहचानो और यदि व्यर्थ या विकारी या नकारात्मक हैं तो वहीं समाप्त कर दो।

यह प्रक्रिया भीतर जाकर करनी है। कइयों को भीतर जाना बन्धन लगता है परन्तु वास्तव में मुक्ति की शुरूआत अन्दर से ही होती है। मन को परखना और बदलना यह गुप्त प्रक्रिया है। जैसे बीज धरती के अन्दर क्रिया करके फिर बाहरी जगत को परिणाम दिखाता है। मन भी बीज है। यह भी अन्दर ही अन्दर अपने पर क्रिया करके बाहरी जगत को अपने परिवर्तन का परिणाम दिखाता है। जगत उसकी बदलने की क्रिया को नहीं देखता पर उसके बदलाव को अवश्य देख पाता है।

हम अपने बच्चों को सिखाते हैं कि कल अंग्रेजी का पेपर है अत: आज इतिहास मत पढ़ो, अंग्रेजी की अच्छे से तैयारी करो। यदि बच्चा अंग्रेजी के बजाए हिन्दी या भूगोल की पुस्तक लेकर बैठ जाए तो हम झुंझलाते हैं कि फीस के पैसे व्यर्थ चले जाएंगे इसलिए जिस समय जो विषय जरूरी है, उस समय वही पढ़ो।

जीवन की परीक्षा में हम क्या कर रहे थे?

बच्चों को किस समय क्या करना चाहिए, यह सही निर्णय हम तुरन्त ले लेते हैं परन्तु अपने बारे में? मान लीजिए हमारे शरीर के किसी अंग में दर्द है और हम दूसरे-दूसरे कार्यों को महत्त्व देते हुए दर्द की उपेक्षा किए जा रहे हैं। कभी सोचते हैं, जब बिल्कुल खाली होंगे तब इलाज करेंगे, अमुक व्यक्ति की छुट्टी होगी तब करेंगे, सीजन के बाद करेंगे और ऐसे समय को खिसकाते-खिसकाते दो या तीन महीने निकाल देते हैं। इसके बाद डॉक्टर के पास गए तो उसने कहा, दो महीने पहले आ जाते तो मात्र दवा से काम चल जाता, अब तो आपरेशन करना पड़ेगा और एक लाख से ऊपर खर्च हो जाएगा। हम बच्चे को फीस की दुहाई दे कर समय के अनुकूल विषय पढ़ने की प्रेरणा दे रहे थे परन्तु जीवन की परीक्षा में हम क्या कर रहे हैं? बीमारी वाले विषय को छोड़कर और-और विषय पढ़ते रहे, दर्द भी सहा और इलाज भी महंगा कर बैठे।

गुण और शक्तियों रूपी धन

जीवन की पाठशाला में हम सभी विद्यार्थी हैं। केवल बच्चों को नहीं, हम सभी को भी प्रतिपल सीखना है। बच्चों का पाठ्यक्रम तो सीमित होता है, छह, आठ, दस या कुछ और ज्यादा किताबें, लेकिन जिन्दगी की परीक्षा का न पाठ्यक्रम निश्चित है, न समय। ऐसे में कभी भी, कहीं से भी आ जाने वाली परिस्थिति को पार करने के लिए मन का बल चाहिए, आत्मबल चाहिए, वह हमने कितना इकट्ठा किया है? धन तो एकत्रित कर लिया पर धन हर जगह समाधान नहीं दे पाता। एक परीक्षा सामने आई सम्बन्ध के रूप में। अचानक पता चला कि बच्चे को कुसंग लग गया। क्या धन से बच्चे का कुसंग छुड़ा सकेंगे? बैंक में तो हमारे पाँच करोड़ हैं। बच्चा गलत समय पर आता है, गलत चीजें खाता-पीता है, सामने बोलता है, अपशब्द बोलता है......। इन्हें ठीक करने में धन की क्या भूमिका है? यहाँ तो आत्मा में गुण और शक्तियों रूपी धन की जरूरत है। हम बच्चे के व्यवहार को सहन कर सकें, फिर उसकी कमजोरियों का सामना कर सकें, उसकी नादानी पर रहम कर सकें, अपने शुद्ध स्नेह से उसे बदल सकें, धैर्य से उपयुक्त वातावरण का निर्माण कर सकें आदि-आदि। क्या यह धन हमने कमाया, इतना मनोबल एकत्रित किया?

केवल भौतिकता के सहारे चैन नहीं मिल पाता

यदि मनोबल नहीं है तो बच्चे को देख-देख रोयेंगे, दुखी होंगे, खाना भी नहीं खाया जाएगा, दिनभर चिन्ता लगी रहेगी, रात को नींद भी नहीं आएगी, मन को कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा परन्तु सवाल यह है कि ऐसे में हमारा अतिप्रिय धन (5 करोड़), जो हमने सारी ऊर्जा झोंककर कमाया, क्या कर रहा है? हमने कमाया था कि आड़े वक्त में काम आएगा और यह आड़ा वक्त आया तो वह क्या कर रहा है, मेरी मदद क्यों नहीं कर रहा, मुझे चैन से सुला क्यों नहीं रहा? इसलिए कि जीवन केवल भौतिक धन के सहारे सारे चैन नहीं पा सकता, इसके लिए आत्मबल, सहनशीलता, धैर्य, नम्रता, शान्ति आदि आध्यात्मिक धन भी चाहिएँ। ये भी तो कमाने पड़ते हैं। इन्हें कमाने का आधार है आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग का अभ्यास।

जरूरी है हर पल विचारों का नवीनीकरण

सम्बन्धों का पेपर केवल पुत्र तक सीमित नहीं है, परिवार का कोई भी सदस्य परीक्षा का रूप धारण कर सकता है। पति शराबी है, बहू से स्वभाव का मिलन नहीं हो पा रहा है, बेटी स्वच्छन्द हो गई है, पड़ोसी परेशानियाँ खड़ी करता है, लड़के के ससुराल वाले लड़के को सिखा-पढ़ा देते हैं, लड़की के ससुराल वाले धन के लालची हैं – ऐसी समस्याओं के हल के लिए चाहिए मन की समाधानकारी सोच, मन की शान्ति और सम्बन्धित व्यक्ति या घटना के प्रति शान्ति के प्रकम्पन। क्या ये प्रकम्पन देने हमने सीखे? यदि नहीं तो सुबह, दोपहर, शाम, रात्रि मन एक ही बात के चारों और मंडराता रहेगा कि बहू ऐसे क्यों करती है, बेटी कहना क्यों नहीं मानती है, बेटा समय पर घर क्यों नहीं आता है? पति जिम्मेवारियाँ पूरी क्यों नहीं करता है? आठों प्रहर, सप्ताह के सातों दिन वही विचार! यदि बैंगन की सब्जी दो दिन लगातार खा लें तो जिव्हा और मन उक्ता जाते हैं (बोर हो जाते हैं, खुशी-उमंग खत्म हो जाते हैं), तो क्या उन्हीं विचारों को सोचते-सोचते मन की उमंग खत्म नहीं होगी? बोरियत नहीं आएगी? आएगी, अवश्य आएगी। इसे खत्म करने के लिए चाहिए समाधानी चिन्तन; यह घटना किसी और के साथ घटी होती तो मेरे विचार कैसे होते, उस प्रकार का उपराम और न्यारा चिन्तन; कुछ नया, ऊँचा, श्रेष्ठ, सकारात्मक और कर्मगति को स्पष्ट करता हुआ चिन्तन। यदि हमने ऐसा नहीं किया, विचारों की पटरी नहीं बदली, विचार उसी दायरे में दौड़ते रहे तो चाहे हम कितना भी नया पहन लें, कितना भी स्वादिष्ट खा लें, कितने भी सुन्दर दृश्य देख लें, फिर भी अपने को तरोताजा महसूस नहीं करेंगे। बासी विचार इन सब पर भारी पड़ते रहेंगे। अत: सबसे पहले चाहिए हर पल विचारों का नवीनीकरण। नवीन और तरोताजा विचार ही तो जीवन को आनन्दमय बनाते हैं।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

श्रद्धांजलि

साकार मात-पिता के हस्तों से पली, यज्ञ की आदिरत्न, हम सबकी अति प्रिय **सरला दादी** बहुत समय से बैंगलुरू (कुमारापार्क) में रहकर अपनी अथक सेवायें देती रहीं। आपका जैसा नाम था वैसे ही गुण थे। आप बहुत सरलचित्त, नम्रचित रह सबकी अलौकिक पालना करती रहीं। आपके मीठे बोल सबको आकर्षित कर लेते थे। सेवाओं के प्रारम्भ में बाबा ने आपको जहाँ भी सेवा के लिए भेजा, सदा हाँ जी करते, आज्ञाकारिता, वफादारी, ईमानदारी का आप उदाहरण बनीं। आपने बैंगलुरू के पहले कानपुर (यू.पी.) में रहकर बहुत अच्छी सेवायें कीं। आप त्याग, तपस्या की प्रतिमूर्ति थीं।

आप बहुत प्यार से बाबा के लिखे हुए गीत गाती थीं। ऐसी मीठी, सबकी स्नेही दादी ने 11 सितम्बर, 2017 को, करीब 92 वर्ष की आयु पूरी कर सवेरे-सवेरे अपना पुराना शरीर छोड़ प्यारे बापदादा की गोद ली। ऐसी आदिरत्न दादी को सम्पूर्ण दैवी परिवार विशेष स्नेह सुमन अर्पित करता है।

आवश्यकता है

एम.एस.सी. बायोकेमिस्ट्री-1 (पुरुष/महिला)
बी.एस.सी.नर्सिंग-2 (केवल महिलायें),
शिक्षण अनुभवी को प्राथमिकता

संपर्क करें : एस.एल.एम.ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड।

मोबाइल नं.8432345230

ई-मेल :- slmgnc.raj@gmail.com

'पत्र' संपादक के नाम

जुलाई, 2017 अंक में मुखपृष्ठ के चित्र पर लिखित "राजयोग की प्राप्तियाँ" दिल को छू गई। मोती चुगने वाले हंस को देखकर राजयोग के प्रभाव का मन में चिंतन चलता है। सचमुच इससे मन को शान्ति मिलती है। चित्रकार तथा पृष्ठ को बनाने वाले को लाख-लाख शुभेच्छा।

ब्र.कु.शिवराम राजाध्यक्ष, वेंमुर्ला, सिंधुदुर्ग (महाराष्ट्र)

अगस्त, 2017 अंक में 'त्याग व सेवा की मूरत माता' लेख में उप-शीर्षक 'माँ और शिशु – सच्चे मित्र' को पढ़ा तो लगा कि लेखक ने मुझ आत्मा के शैशव काल के 'उस-क्षण' का साक्षात्कार करा दिया जिसका हर मातृ-स्नेही करना ही चाहता है। यह दो चैतन्य खिलौनों के पारस्परिक खेल का चित्रण है जिसमें हार-जीत के स्थान पर ममत्व के स्नेहिल स्पर्शों की कोमलतम गेंद खुद बखुद बिना मेहनत उछलती रहती है। वाह! लेखक भाई, वाह! ऐसे लेखों से 'ज्ञानामृत मासिक' इतनी बढ़िया शृंगारित हो जाती है कि वर्णन करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। बहुत-बहुत धन्यवाद।

ब्र.कु.शम्भू भाई, जयपुर (सोडाला)

'ज्ञानामृत' अपने नाम के अनुरूप ऐसी अनूठी पत्रिका है जो श्रेष्ठ ज्ञान रूपी अमृत से दुखों-क्लेषों, समस्याओं से त्रस्त-खिन्न दिलों में ऐसे ही शक्ति का संचार कर देती है जैसे मुरझाये पौधों को जल मिल जाने पर उनमें पुन:सामर्थ्य आ जाता है। अगस्त, 2017 अंक में सम्पादकीय 'कटु वचन प्रबन्धन', किश्तों में लिखा जाने वाला लेख 'त्याग व सेवा की मूरत माता' और 'कामिनी नहीं, कल्याणी' बहुत ही प्रशंसनीय हैं। 'कामिनी नहीं, कल्याणी' लेख पश्चिमी जीवनशैली अपनाने की अंधी दौड़ में शामिल आधुनिक युवा नारियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी है। लेख में व्यक्त भावों को यदि लघु फिल्म, धारावाहिक अथवा अन्य उपयुक्त तरीकों से समाज में पहुँचायें तो नारी की अपने प्रति सोच और नारी के प्रति औरों की मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन सम्भव है।

ब्र.कु.के.एल.छाबड़ा, रुड़की (उत्तराखंड)

ज्ञानामृत पत्रिका के हर अंक में छपे लेखों को मैं कई बार पढ़ता हूँ और हर लेख में लिखी बातों पर विचार करता हूँ। अगस्त, 2017 अंक में प्रकाशित लेख 'रक्षाबन्धन आज के सन्दर्भ में' बहुत ही अच्छा लगा। इस में लिखा है, "यह त्योहार एक ऐसे महत्वपूर्ण विषय से जुड़ा हुआ है जिसको लेकर आज समूचा विश्व चिन्तित है और वह विषय है दुनिया की आधी आबादी अर्थात् महिलाओं के मान-सम्मान की रक्षा!" "मेरा स्वभाव शान्ति है" लेख बहुत ही सरल भाषा में लिखा गया है। एक बार पढ़ने से इसका सारा मतलब बड़ी आसानी से समझ में आ जाता है। सभी को साधुवाद!

ब्र.कु.एम.एल.अरोडा, पंचकुला (हरियाणा)

सितम्बर, 2017 अंक में 'सर्वांगीण मेकप" लेख सैद्धांतिक एवम् व्यवहारिक रूप से अत्याधुनिक समाज को प्रेरणा देने वाला है। 'मूल्य शिक्षा – शिक्षा प्रणाली की ज्वलन्त आवश्यकता" लेख से 'मूल्य शिक्षा' के क्रियान्वयन की प्रेरणा प्राप्त होती है।

डॉ.रामस्वरूप गुप्ता, खीरी-लखीमपुर (उ.प्र.)

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

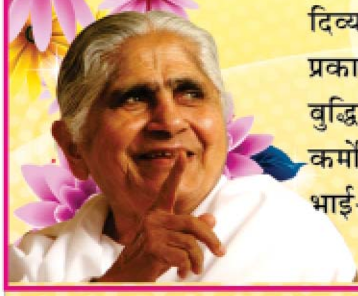

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- अपने दिल पर हाथ रखकर क्या देखो?

उत्तर- अपने दिल पर हाथ रखकर देखो कि दिल में दिलाराम बैठा है ना! श्रीमत को सिर-माथे पर रख करके अपने को ऐसा मजबूत बनाना है, जो कोई भी दृश्य सामने आवे वो चला जाये क्योंकि मैं तो बाबा के साथ हूँ ना। रचता और रचना का ज्ञान बहुत कीमती है। कोई यहाँ हाज़िर है, कोई अपने स्थान पर है पर बुद्धियोग मधुबन में लगा हुआ है। कोई ऐसे भी होंगे, बैठे यहाँ हैं पर बुद्धि बाहर है। सच्चे दिल से यह कोई बतायेगा? दीदी कहती थी, योग करो, योग करो, इससे जहाँ बैठे हैं वहाँ शान्ति की शक्ति से पॉवरफुल वायुमण्डल हो जाता था। वो वायब्रेशन सेवा में सफलता दिलाता है।

आपस में एक-दो के लिये भी हमारी शुद्ध भावना होनी चाहिए क्योंकि संगठन की शक्ति बहुत अच्छा उड़ने में मदद करती है। चल उड़ जा रे पंछी... ये शब्द कितने अच्छे हैं! पुरुषार्थ की मेहनत नहीं है। सारे कल्प में ऐसा चांस फिर नहीं मिलेगा। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? साकार में बाबा ने जैसी भासना दी, उससे भी ज्यादा अव्यक्त हो करके दे रहा है।

बाबा बहुत अच्छा है, सिर्फ हमको टेन्शन फ्री रहना है। जो टेन्शन फ्री हैं, बाबा उनके सामने हाज़िर है। कोई बात का फिकर नहीं हो क्योंकि फिकर से फारिग करने वाला सद्‌गुरु सामने है। मेरा ऐसा सतगुरु, ऐसी श्रीमत देता है जो सिर-माथे पर रखने से दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल हो जाता है। इससे एक तो बाबा की डायरेक्ट ताकत मिलती है, दूसरा नॉलेज मन में ऐसी फिट हो जाती है जो यह क्यों हुआ? क्या हुआ? कैसे होगा? इस तरह के संकल्प ही नहीं आते क्योंकि यह काँ काँ करने वाले कौवे का काम है। कौवे काले होते हैं। हम क्या हैं, कैसे हैं, जैसे हैं, वैसे हैं, बाबा ने अपना बना लिया है, अब अपने जैसा बना रहा है। इतना अच्छा बाबा है जो सिखाता है कि आपका एक-एक संकल्प श्रेष्ठ हो। इस दुनिया से कोई लगाव-झुकाव न हो। यह लगाव-झुकाव स्वमान में रहने नहीं देता है। बाबा देखता है, बच्चों की आपस में कितनी सच्चाई और प्रेम है। सच्चाई और प्रेम का वायुमण्डल बाबा को अपना बनाने में मदद करता है।

प्रश्न- बाबा का हाथ पकड़ पार जाने के लिए कौन-सी धारणा अनिवार्य है?

उत्तर- बाबा ने हाथ में हाथ देकर के सब बातों से पार कर लिया है, खिवैया है ना। खिवैया का काम है नैया खड़ी करना और हमको बिठाना। पार ले जाने के लिये बाबा ने हाथ में हाथ दिया पर हाथ में हाथ भी तब देवे जब मैं पहले नाव में जम्प लगाऊँ। कोई भी बात मुझे रोक न लेवे। न बोझा है, न कोई बैग-बैगेज है। जो बाबा की मुरली रोज़ सुबह पढ़ते-सुनते हैं वे सहज जम्प लगा सकते हैं। बाबा ने जो प्यार दिया है, उस प्यार में ही फिदा हुए हैं। शमा को देख परवाने फिदा हो जाते हैं। बाबा क्यों आये हैं? बाबा आये, साथ दिया, हाथ में हाथ दिया। जब हाथ में हाथ दिया तो

हम बाहर की दुनिया से फ्री हो गये। बाबा ने जो खज़ाना दिया है, उससे खेलने लगे। पता है वैकुण्ठ में जाना है, उसके लिये अभी घर को याद करना है। अभी क्या याद है? बाबा। बाबा ने कहा, बच्ची, अब घर जाना है। जी बाबा। ऐसे नहीं, हाँ चलेंगे, देखेंगे। नहीं, नहीं। चल रहे हैं, प्रैक्टिकल दिख रहा है इसलिये बाबा एक्स्ट्रा प्यार कर रहा है। बाबा से मिलन में क्या-क्या मिला है! हम निर्मोही, निर्लोभी हो गये हैं। भले और विकार तो गये पर सूक्ष्म लोभ और मोह भी चला गया।

हमें क्या चाहिए! कुछ नहीं चाहिए तो हम कितनी तृप्त, सन्तुष्ट आत्मा हैं। करावनहार करा रहा है, भगवान हमारा साथी है फिर साक्षी होकर सारा जीवन पार्ट प्ले किया है पर खेल समझके किया है, खेल को खेल की रीति से किया है। हम सिर्फ अच्छा खेलते हैं तो कमाई की गठरी भी भरती जाती है। फिर कोई आता है तो शेयर करते हैं। बाबा का प्यार हमें सेफ भी रखता है, साफ भी रखता है। मेरे पास कुछ नहीं है, सब बाबा का है।

जो अन्तर्मुखी होता है उसकी बुद्धि स्थिर होने से सहज काम कर देती है। बाबा कहते, बच्चे, हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है, यह बहुत अच्छा है क्योंकि बाबा का सिर पर हाथ है अर्थात् बाबा के हाथ में हाथ दिया है, तो उसका हाथ यहाँ सिर पर है इसलिए दिमाग ठण्डा है, दिल खुश है, स्वभाव में सरलता है। किसी से कभी रफ-टफ नहीं बोला होगा क्योंकि दिमाग ठण्डा है ना। दिल कहे, बाबा तेरा शुक्रिया। तो हाथ देना हमारा काम है, साथ देना ऑटोमेटिक उसका काम है। साथ के लिये भटकते वा पुकारते नहीं हैं। हाथ और साथ होते भी कितना साक्षी है।

प्रश्न-रूहानियत में स्थित करने वाले मुख्य पाँच गुण कौन-से हैं?

उत्तर- नम्रता, सत्यता, धैर्य को धारण करना है लेकिन उससे भी पहले है पवित्रता के साथ मधुरता। ये पाँच बातें जहाँ हैं वहाँ रूहानियत है। बाबा मेरा दिलवाला है, वह मेरे दिल की भावना समझने वाला है। समय थोड़ा है, जो आज का समय है, कल नहीं होगा। मुख्य अच्छे से अच्छी बात यह है कि इस पढ़ाई में ही कमाई है। बोलने के बजाए चुप रहने में बहुत अच्छा लगता है। तभी देह से न्यारे बनने की शक्ति परमात्मा के प्यार से मिलती है। जिस परमात्मा बाप को सब भगत आत्मायें पुकारती हैं, मैं भी पुकारती थी, कहाँ है मेरा भगवान! क्योंकि मुसलमान अल्लाह कहेंगे, क्रिश्चियन गॉड कहेंगे, हम उसको भगवान भी कहते हैं, ईश्वर भी कहते हैं। एक तो परमपिता परमात्मा है, फिर वन्डर है हमारा शिक्षक भी है, सारे जीवन में हमारी रक्षा करने वाला, हमें सम्भालने वाला भी वही है। मैं नहीं समझती हूँ कि मुझे कभी यह ख्याल आया होगा कि मुझे फलाने ने अच्छी मदद की है, नहीं। मदद है बाबा की, हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी।

हम जहाँ भी हैं, खुश हैं। यहाँ मैं ना-खुश हूँ, ऐसे शब्द न निकलें। सेवा कराने वाले बाबा में भावना हो, वो भावना आपेही सेवा करा रही है, यह देखने को मिलता है। जैसे अमृतवेले का समय कीमती है इसलिये कभी मिस नहीं करते हैं, ऐसे यह नुमाशाम का समय भी मिस नहीं करना चाहिए। सेवा कहाँ भी हो पर बुद्धि बेहद में हो। मैंने सेवा की है या करती हूँ, ना ना। सारी कमाल है मेरे बाबा की।

प्रश्न- दया और रहम में क्या फर्क है?

उत्तर- किसी की भी अन्दरूनी कमी को ठीक करना, यह है रहमदिल बनना। अभी प्रेजेंट समय अपने आपको देखो, चाहे हमको देखो, जो भी बहन-भाई हैं उनकी कमी को न देख, अच्छाई इमर्ज करके उनको उमंग-उल्हास में लाना, यह है रहमदिल का काम। परन्तु सिर्फ दया करना और कुछ करना नहीं, तो इससे कभी किसी का दु:ख दूर नहीं होता है। रहमदिल नेचुरल है। दयाभाव हो सकता है, परन्तु जब प्रैक्टिकल उस भावना से, उस वायब्रेशन से किसी में चेंज लाने की शक्ति पैदा हो जाये, उसमें रहमदिल की भावना काम करती है। ❖

परिस्थिति रूपी अंगारों की आँच भी न आने दी

ब्रह्माकुमारी डॉ.शिल्पा देसाई, इन्दौर

मैं पहली बार 15 मई, 2012 को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आई। बेहतर शब्दों में कहूँ तो, इस दिन मेरा नया जन्म हुआ एक नई दुनिया में। बचपन से मुझे अध्यात्म, पौराणिक कथाओं और भजनों में बहुत रुचि थी। माँ ने मुझे भगवान से प्रेम करना सिखाया और पिताजी ने शुरू से ही कर्मयोगी, दयामय और सादा-श्रेष्ठ जीवन जीने की सीख दी। हमेशा से मुझे पक्का निश्चय रहा कि ईश्वर ने मुझे किसी बहुत ही विशेष कार्य के लिए इस धरती पर भेजा है।

आँखों में पानी, चेहरे पर मुस्कान

राजयोग के साप्ताहिक कोर्स के दौरान पहली बार जब मैं योग-कक्ष में बैठी तो फूट-फूट कर रोने लगी। ओमप्रकाश भाई जी से मिलने पर मैंने उनसे पूछा कि मैं क्यों रो रही हूँ तो उन्होंने मुसकराकर जवाब दिया कि बहुत-बहुत लम्बे समय बाद अपने बिछुड़े हुए पिता से मिल रही हो ना, इसलिए खुशी के आँसू बह रहे हैं। उस दिन तक मैंने सिर्फ सुना था कि भगवान ही मेरे माता-पिता हैं लेकिन महसूस पहली बार कर रही थी। तभी मैंने जाना कि आँखों में पानी और चेहरे पर मुस्कान साथ-साथ कैसे हो सकते हैं। किसी का प्यार इतना नि:स्वार्थ और गहरा हो सकता है कि उसे महसूस करते ही प्रेम के आँसू आ जाते हैं।

बेबस किया बेटी की बीमारी ने

ईश्वरीय ज्ञान में आने के कुछ महीनों पहले से ही मेरी बेटी को तेज सिरदर्द होने लगा था। उस समय वह नौवीं कक्षा में थी। दर्द इतना तेज था कि वह नींद से जागकर रोने लगती थी। उसका खाना-पीना बहुत कम हो गया था, स्कूल भी नहीं जा पाती थी। दिन के 15-16 घंटे बिस्तर में ही रहती थी। बहुत डॉक्टरों को बताया लेकिन सही निदान न हो सका। मैं और मेरे युगल दोनों डॉक्टर होते हुए भी स्वयं को बेबस महसूस करने लगे। भारी से भारी दर्द निवारक दवा का भी उस पर असर न होता। कुछ महीनों बाद उसे बेहोशी के दौरे भी आने लगे। बार-बार गिरने से उसे चोट तक लग जाती थी। हमने सबकुछ आजमा लिया। एलोपैथी के अलावा होम्योपैथी, आयुर्वेद, एक्यूप्रेशर यहाँ तक कि मेरी सासू माँ की सन्तुष्टि के लिए ज्योतिष भी, लेकिन सब बेकार। उसकी देखभाल के लिए मैंने भी अपनी प्रैक्टिस बंद कर दी।

मुरली से मिलने लगे समाधान

दूसरी ओर मैं नियमित सेवाकेन्द्र पर जाकर मुरली सुनने लगी, राजयोग का नियमित अभ्यास करने लगी। मुरली में कितनी ही छोटी-बड़ी उलझनों-समस्याओं का समाधान मिलने लगा। मुझे महसूस होने लगा कि शिवबाबा मुझ पर अपार शक्ति, प्रेम और शान्ति बरसा रहे हैं। मैंने पाया कि बेटी की तकलीफ देखते हुए भी अब मैं पहले जैसी विचलित नहीं होती तथा हिम्मत और शान्ति से परिस्थिति का सामना कर पा रही हूँ। मेरी समझ में यह अच्छी तरह आ गया था कि जो कुछ हमारे साथ हो रहा है वह हमारे ही कर्मों का फल है और यह हिसाब-किताब चुकता हो रहा है। अत: मुझे बेटी की आत्मा को शान्ति, शक्ति और प्रेम के वायब्रेशन देने हैं, धैर्य से इस परीक्षा को पास करना है। धीरे-धीरे उसकी तबीयत में सुधार आने लगा। तबीयत

ठीक होने पर मेरी बेटी ने भी राजयोग का कोर्स किसा। सेवाकेन्द्र का वातावरण और बहनों के प्यार व शुभ भावनाओं ने उस पर बहुत सकारात्मक असर डाला। आज वह मेडिकल कॉलेज में अच्छी तरह पढ़ाई कर रही है।

बाबा की याद बन गई कवच

मेरे ज्ञान में आने के छह महीने बाद मेरे पिता की तबीयत बहुत खराब हो गई। जब मैं बहुत छोटी थी, तब से उनका सपना था कि वे मेरे लिए एक सौ बिस्तर का अस्पताल बनायेंगे। उन्होंने बनाया भी, 225 बिस्तर का अस्पताल बनकर लगभग तैयार हो चुका था और तभी (2012 में) उन्हें दिल का दौरा पड़ा। बरसों से मुझे इसी बात का डर था कि ऐसी घड़ी आने पर मैं क्या करूँगी? लेकिन उसी वक्त मुझे स्वयं को देख बहुत आश्चर्य हुआ। मैं जरा भी घबराये बिना, शान्त दिल और दिमाग से उन्हें अस्पताल ले गयी। मेरे सामने उन्हें कार्डिएक मसाज दिया गया, बिजली के झटके दिए गए, उन्होंने अन्तिम सांस ली। सारा वक्त शिवबाबा की शिक्षा मन में गूँजती रही कि बच्चे, साक्षी होकर नजारा देखो तो वातावरण की सेंक नहीं लगेगी। मैंने ऐसा ही किया। शिवबाबा की याद जैसे मेरे लिए एक कवच बन गई। मैं जानती और समझती थी कि जिसे मैं प्यार करती हूँ वह तो एक अजर, अमर, अविनाशी आत्मा है, ना कि यह शरीर। यहाँ उसका रोल पूरा हुआ। अब उसे नया स्वस्थ शरीर मिलेगा, एक नया परिवार मिलेगा जो उसे बहुत प्यार देगा। इसमें रोने की तो कोई बात ही नहीं।

भावुक को बनाया शक्तिशाली

पिताजी से मेरा इतना प्रगाढ़ संबंध था कि मुझे हमेशा डर लगता था कि उनके देहान्त के बाद मेरा क्या होगा? कहीं मैं अपना मानसिक सन्तुलन तो नहीं खो दूँगी? लेकिन शिवबाबा के साथ से यह अति कठिन परिस्थिति भी सहज पार हो गई। पिताजी के शरीर छोड़ने के पश्चात् अस्पताल का काम आर्थिक समस्या के कारण रुक गया। मैंने और मेरे युगल ने पिताजी का सपना पूरा करने की बहुत कोशिश की लेकिन अन्तत: हमें यह प्रोजेक्ट बेच देना पड़ा। इसके बावजूद मैंने पाया कि मुझे दुख नहीं हो रहा है। यह मेरे लिए एक अचम्भा था क्योंकि मैं बहुत ही भावुक इन्सान थी। न जाने कब शिवबाबा ने मुझ में इतनी शक्ति भर दी कि इस वक्त भी मैं विचलित नहीं हुई। मुझे बिल्कुल स्पष्ट था कि यह भी कर्मों की गुह्य गति है। आज यह अस्पताल किसी और के नाम हो गया तो जरूर उसी का रहा होगा और फिर यह भी सृष्टि नाटक का एक दृश्य है जिसे मुझे साक्षी होकर देखना है। साथ ही साथ शिवबाबा ने कहा है कि जो होता है उसमें कल्याण समाया हुआ है इसलिए फिक्र की तो कोई बात ही नहीं है।

भगवान का साथ महसूस किया हर वक्त

पिताजी के शरीर छोड़ने के बाद 2014 में माँ ने लकवे की बीमारी में और 2016 में इकलौते बड़े भाई ने दिल की बीमारी में शरीर छोड़ा। दोनों की लम्बी शारीरिक और मानसिक भोगना और देहान्त को साक्षी होकर देखने का पेपर भी आया। हर वक्त मैंने भगवान का साथ महसूस किया। मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि परमपिता परमात्मा शिव भोले भगवान ने, तूफानों के आने के पहले ही मुझे अपनी गोद में समेट कर सुरक्षित कर लिया, अपनी बाँहों में भरकर गहरी, डरावनी, अंगारों भरी खाई पार करा दी और मुझ पर आँच तक नहीं आने दी। ऐसा है परमात्मा का प्यार। वो परमात्मा, ईश्वर, खुदा जिसे सारी दुनिया ढूँढ़ रही है, मेरे परमप्रिय पिता हैं और मैं उनकी लाड़ली विशेष सन्तान हूँ, इस बात का अहसास ही मुझमें खुशी, शक्ति, शान्ति और प्रेम भर देता है। वाह बाबा वाह! ❖

बाजार में कई चीजें दिखने में आती हैं पर हम सभी तो नहीं खरीदते क्योंकि हमें अपना पैसा बर्बाद नहीं करना है। इसी तरह जिन्दगी में कई बुरी बातें देखने व सुनने में आती हैं पर सबको अपने मन में नहीं घुसाना क्योंकि हमें अपनी मानसिक शक्ति बर्बाद नहीं करनी है।

कीमो की किरणें लगती थी बाबा की किरणें

ब्रह्माकुमारी रीटा, वसई (महाराष्ट्र)

मैं सितम्बर, 1994 से ईश्वरीय ज्ञान में हूँ। कोर्स के दौरान जब ब्रह्माकुमारी बहन ने समझाया कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु रूप हैं तो मुझे यह बात बहुत भा गयी और मेरा उन पर अटूट निश्चय बैठ गया। भगवान और उनकी बातों से गहरा प्यार कैसे जीवन नैया को पार ले जाता है, इसके अनुभव कदम-कदम पर होने लगे। बचपन से मुझे अस्थमा की बीमारी थी। ढेरों इलाज हुए परन्तु सब असफल रहे लेकिन जब भिन्न-भिन्न ईश्वरीय सेवाओं का भाग्य मिला और यह तन सेवा में लगने लगा तो अस्थमा कब गायब हो गया, पता भी नहीं चला। ईश्वरीय संग ने मुझे रोगमुक्त कर दिया।

सन् 2014 में ईश्वरीय निश्चय की बड़ी परीक्षा आयी, अचानक मैं बहुत ज्यादा बीमार रहने लगी। निमित्त बहन से सलाह ली और युगल के साथ जाकर जाँच करायी तो बताया गया कि एक साल से शरीर के भीतर कैंसर पनप रहा है। टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल में इलाज के लिए गए तो पता चला कि बहुत ज्यादा ही बढ़ चुका है। यह सुनकर युगल थोड़े डर गए परन्तु बाबा की कमाल, मुझे कोई डर या चिंता नहीं हुई क्योंकि परमात्मा पिता के महावाक्य सदा ही बुद्धि में हैं कि 'सर्वशक्तिवान भगवान बाप तुम्हारे साथ है, तुम्हारा अकल्याण कभी नहीं हो सकता, जो होगा अच्छा ही होगा।'

इलाज 6 महीने चला। इलाज में जब धन की कमी पड़ने लगी तो अन्य किसी लौकिक सम्बन्धी को बताने के बजाए केवल शिव बाबा को ही धन की कमी की बात बतायी क्योंकि पहला सगा-सम्बन्धी बाबा ही है। मैंने शिव बाबा से कहा, आपको ही इलाज पूरा करवाना है और धन की व्यवस्था भी करनी है। हॉस्पिटल में पैसे भरने की तारीख से दो दिन पहले, युगल को कम्पनी से तीन महीने की तनख्वाह जितनी धनराशि बोनस के रूप में मिली। जितने की जरूरत थी, बाबा ने उससे भी अधिक का इन्तजाम कर दिया।

जिस दिन मेरी कीमो थेरेपी होने वाली थी उस दिन शिव बाबा के कमरे में जाकर बाबा को कहा, मीठे बाबा, कीमो का दर्द आप ले लेना और मुझे अपनी याद की मिठास देना। बाबा ने यह भी आश पूरी कर दी। मेरे साथ अन्य रोगी भी थे, बेचारे दर्द से कराह रहे थे और मैं दर्द की महसूसता से परे थी। बाबा की सुंदर शिक्षाओं के चलते अन्य रोगियों के लिए मैं योग करती थी। कीमो की किरणें मुझे यूँ महसूस होती थी जैसे बाबा की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं और स्वयं बाबा इलाज कर रहे हैं, न कि लेजर मशीन।

पानी को योग से शक्तिशाली बनाकर रोज ग्रहण करती थी। सूरज भाई जी के क्लासेस द्वारा सुना था कि मास्टर सर्वशक्तिमान के स्वमान से बीमारी चली जाती है। "मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ" रोज इस स्वमान का अभ्यास लिखकर करती थी और यही महसूस करती थी कि शिव बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है। बाबा मुझे विजय का तिलक लगा रहे हैं। सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनों और विद्यार्थी भाई-बहनों ने मेरे लिए सामूहिक योग किया। मम्मा, बाबा, दादियाँ, वरिष्ठ बहनें, साथी भाई-बहनें – सभी की दुआओं ने बीमारी को एक खेल समान होने का अनुभव कराया।

जब मैं हॉस्पिटल जाती और किसी मरीज को तनाव में देखती तो शिव बाबा मेरे मुख से ऐसी बातें कहलवाते जो तनाव वाले भी हंसने लगते और उनको बाबा का परिचय भी

मिल जाता। फिर दूसरे दिन मुझे ढूँढ़ते, कहते, आप हमसे रोज मिला करो, आपको देखकर ही सन्तुष्टि मिलती है।

आज की तारीख में मैं एकदम स्वस्थ हूँ। जीवन खुशियों से भरपूर है। कदम-कदम पर अनुभव करती हूँ कि जितना मैं शिव बाबा से प्यार करती हूँ, बाबा उससे कई गुना ज्यादा प्यार मुझे करते हैं। जिस सम्बन्ध से बाबा को याद करती हूँ, बाबा हाजिर हो जाते हैं।

शब्दों में वह सामर्थ्य नहीं जो भगवान के उपकारों के प्रति आभार के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर पाएँ लेकिन दिल जरूर कहता है, 'ऐसी अनमोल जीवन देने के लिए विशेष मीठे बापदादा का तथा सभी वरिष्ठों का पद्मापद्म गुना धन्यवाद।' ❖

आत्म-स्थित होकर रहने के लाभ

ब्रह्माकुमार श्याम, आर्टिस्ट, शान्तिवन

प्यारे शिवबाबा ने कहा है, अनुभव सबसे बड़ी अथॉरिटी है। अनुभव सदा स्मृति में रहता है। ज्ञान मार्ग में तीव्र गति से आगे बढ़ने के लिए ज्ञान को गहराई से अनुभव करना अति अनिवार्य है।

मैं पिछले 49 वर्षों से प्यारे शिवबाबा के ज्ञान में समर्पित होकर सेवा कर रहा हूँ। इस ईश्वरीय मार्ग पर चलते हुए एक बात सबसे अधिक दिल को भायी कि हम एक ज्योतिस्वरूप आत्मा हैं, न कि यह साकार-व्यक्त शरीर। शरीर तो हम आत्माओं को इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कर्म करने अर्थ मिला हुआ एक साधन-मात्र है। शरीर रूपी साधन को चलाने वाली शासक मैं आत्मा हूँ – इस ज्ञान बिन्दु को मैंने गहराई से अभ्यास में लाया। चलते-फिरते, हर कर्म करते यही अनुभव करने लगा कि "मैं आत्मा इस शरीर रूपी राजधानी की राजा हूँ। मैं करावनहार आत्मा शरीर रूपी साधन के हाथों द्वारा कार्य कर रही हूँ। भ्रकुटि सिंहासन के मध्य स्थित होकर, मालिक बनकर सर्व कर्मेंद्रियों रूपी कर्मचारियों को चला रही हूँ। मैं आत्मा इस शरीर को भोजन खिला रही हूँ आदि-आदि।" शनैः शनैः इस अभ्यास के बढ़ते रहने से देहधारियों की यह स्थूल दुनिया, मन के पटल से ओझल होने लगी। आत्माओं का मूल निवास स्थान चिन्तन, स्मरण व अनुभव में दृष्टिगोचर होने लगा। दिव्य दृष्टि से दिखने वाली बातें ज्ञान-चक्षु द्वारा, ध्यान से भी अधिक स्पष्ट अनुभव में आने लगी। एक समय ऐसा भी आया जो इस स्थूल वतन में सिर्फ और सिर्फ आत्माओं का झुंड नजर आने लगा जैसे कि ब्रह्मलोक में नजर आता है।

इस मूल अभ्यास को बढ़ाने से लाभ यह हुआ कि अपने ही कड़े संस्कार-स्वभाव से मुक्ति मिली और साथ-साथ जो व्यर्थ संकल्प मन-बुद्धि को भ्रमित करते थे, उलझन की लहरें पैदा कर देते थे, हर समय बोझ व भारीपन महसूस कराते थे – उनसे छुटकारा हो गया। परिणामतः उलझन, चिड़चिड़ापन और क्रोध का स्थान खुशी, नई सोच, उमंग-उत्साह व कुछ नया कर गुजरने की चाह ने ले लिया। आत्मा को रूहानी पंख मिल गये और अपनी रूहानी मंजिल भी मिल गई। मन-बुद्धि को कुछ नया करने या सोचने के लिए अधिक समय मिलने लगा। इससे कदम स्वतः स्व उन्नति की ओर अग्रसर होते चले गये।

आत्मस्वरूप के गहरे अभ्यास के फलस्वरूप आत्मा के मूल गुण – पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, ज्ञान एवं शक्ति का रोज के जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव किया। आत्मा का पहला पाठ हमारी एकाग्रता को अनेक गुणा बढ़ा देता है जिससे आत्मा में निहित सुषुप्त शक्तियाँ स्वतः जागृत हो जाती हैं और हमारा जीवन ऊर्जावान बन जाता है। इससे हम हर कदम में 'सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इस वरदान को जीवन में चरितार्थ होते हुए अनुभव करने लगते हैं। ❖

आइये, स्वयं को बदलें

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

हम एक ऐसे समाज में रह रहे हैं जहाँ चारों ओर शोषण का बाजार गर्म है। इस कार्य में पराए नहीं, तथाकथित अपने भी लगे हुए हैं। ऐसे माहौल में, नर हो या नारी, सभी को अपने को भीतर से मजबूत बनाने की ओर विशेष ध्यान देना है। यदि हम अन्दर से जरा भी ढीले हुए, भावना में बहे, चरित्र में ढीले हुए, कामनाओं में उलझे, स्वार्थी बने, ईर्ष्या-द्वेष की आग में जले तो हमारी इन कमजोरियों का फायदा उठाने वाले हमारे आस-पास बिखरे पड़े हैं। जैसे किसी पेड़ के नीचे, उसके पत्तों को खाने वाले पशु खड़े हों तो रक्षा का उपाय यह है कि पेड़ अपनी डालियों को ऊपर रखे, झुकने न दे। जैसे ही डाली झुकेगी, पशु मुँह फैलाकर निगलने का प्रयास करेगा। यदि डाली कहे, क्या मुझे झुकने का अधिकार नहीं है? क्या जलती हुई आग में हाथ डालने का भी अधिकार मांगा जाता है? क्या हिलते हुए, गिरते हुए भवन की शरण में जाने का भी अधिकार मांगा जाता है? जहाँ खतरा है, वहाँ से अपने को बचाना स्वतन्त्रता का हनन नहीं वरन् परतन्त्रता से अपना बचाव है।

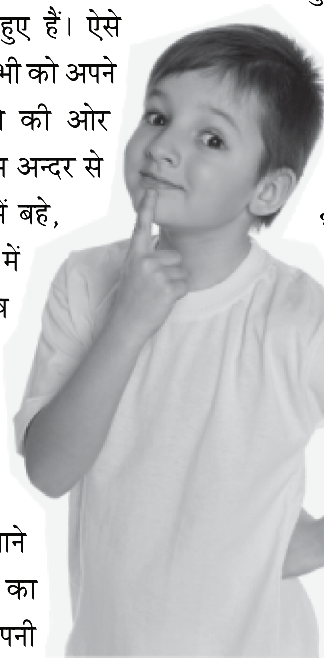

दया की भीख समर्थ से मांगी जाती है

डाली यह भी तो कह सकती है कि केवल एक बार वह पशु मुझे झुक लेने दे, मुझ पर दया दिखाए, मुझे न निगले। परन्तु दया की भीख तो समर्थ से मांगी जाती है, जो इन्द्रियों की तृष्णाओं से पराधीन है उसमें दया जैसी वृत्ति उत्पन्न हो कैसे सकती है? वह तो कहेगा, शोषण मेरा अधिकार है, तुम मेरे अधिकार क्षेत्र में आए ही क्यों? यह जानते हुए भी कि शोषण ही मेरा काम है, फिर भी मेरे पास आ गए तो इसका अर्थ है कि अपना शोषण करवाने में आपकी भी रुचि है। जैसे सर्पों के बीच जाकर जहर से बचने की कामना नादानी है, इसी प्रकार हिंसा और शोषण से भरे वातावरण के सुपुर्द अपने को करके, अछूता रहने की कामना भी नादानी है।

प्रश्न उठता है कि मैं ही क्यों बदलूँ, दूसरा क्यों नहीं, यदि मैं बदल गया और दूसरा ना बदला तो समाधान कैसे होगा? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि मेरे बदलने से, मेरी समस्या का समाधान अवश्य होगा। बदलना अर्थात् समाधान की ओर कदम बढ़ाना।

समस्या से पहले बनते हैं समाधान

एक भूखा ऊँट, भूख मिटाने के लिए बार-बार बबूल के वृक्ष पर मुँह मार रहा था। उसे पत्ते खाने को तो मिलते थे पर काँटे, उसके मुँह को भी छील देते थे। ऊँट ने दूसरी तरफ से मुँह मारा, फिर भी वही दशा हुई। इस प्रकार वह दिशा बदल-बदलकर मुँह मारता रहा पर हर बार पत्तों के साथ उसका मुख भी छिलता रहा। अब दोनों में से कौन बदले? ऊँट या बबूल? ऊँट यदि कहे कि यह बबूल अपने काँटे खत्म करले ताकि मैं सुखपूर्वक पत्ते खा लूँ, तो क्या बबूल मान जाएगा? बबूल बदलेगा या ऊँट को ही बदलना पड़ेगा? अगर ऊँट कहे, मैं क्यों स्थान बदलूँ तो समाधान हो पाएगा? कभी नहीं। अत: हमें दर्द है, तो हम बदल जाएँ। जहाँ शोषण है, अत्याचार है उसे झेलते क्यों रहें, समाधान खोजें, समाधान हर चीज का है। कहते हैं, दुनिया में कोई

ताला ऐसा नहीं जिसकी चाबी ना हो। कोई समस्या ऐसी नहीं जिसका समाधान न हो। समाधान का पहला कदम है स्वयं में बदलाव।

सफलता का सूत्र

सफल जीवन जीने का सूत्र है कि अपने लिए कठोर बनो और दूसरों के लिए नम्र। स्वयं से कोई गलती हो जाने पर उसे यूँ ही न छोड़ दो। अपने आप पर कठोरतम कार्यवाही करो। अपने को समझाओ या कोई अंकुश लगाओ या कुछ सजा दो। इससे वह गलती दोहराई नहीं जाएगी और स्वयं का सुधार तीव्र गति से होगा। परन्तु यदि दूसरे से गलती हो जाए तो उसे क्षमा कर दो। उसकी गलती चित्त पर नहीं रखो। इससे उसका हृदय परिवर्तन अवश्य होगा और वह सुधरेगा भी । इस प्रकार स्वयं के प्रति कठोर बनने से स्वयं का और दूसरे के प्रति नम्र बनने से दूसरे का सुधार हो जाता है।

यदि हम स्वयं की गलतियों के प्रति लापरवाह रहते हैं, 'हो गई तो क्या हुआ' यह भाव रखते हैं तो बार-बार वही गलती दोहराई जाती रहेगी और हम नहीं सुधर पाएंगे। दूसरे की गलती को देख उस पर गुस्सा करने से, सजा देने से उसकी आत्मा को बल नहीं मिलेगा परिणामस्वरूप सुधार की प्रक्रिया नहीं चलेगी, वह गलतियों से उबर नहीं पाएगा। इस प्रकार दोनों का नुकसान होता जाएगा।

दुख का कारण है तुलना

मानव के दुख का कारण है दूसरों के साथ तुलना। तुलना का एक प्रकार है, अमुक की पढ़ाई ऊँची है, मैं पढ़ नहीं पाया। उसकी तनख्वाह ज्यादा है, मेरी तो बस काम चल रहा है। उसके बच्चे बड़े लायक हैं, मेरे बच्चे काम ही नहीं करते। तुलना का दूसरा रूप यह भी होता है – मैं सुन्दर हूँ, वह कुरूप है। मैं होशियार हूँ, वह मन्दबुद्धि है। मुझमें कई खूबियाँ हैं, उसे तो कुछ नहीं आता। किसी भी प्रकार की तुलना या तो हीन भावना से या अहम् भावना से भर देती है। आवरण की आवरण के साथ तुलना हो रही है। यदि आवरण को हटाकर वास्तविक आत्मिक रूप को देख लिया जाए तो तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं बचता। मैं भी ज्योतिबिन्दु आत्मा, वह भी ज्योतिबिन्दु आत्मा। मैं भी परमधाम से आया, वह भी परमधाम से आया। मैं भी अजर-अमर, वह भी अजर-अमर...। आवरण को देखना भौतिक दृष्टि है और आवरण हटाकर वास्तविक आत्मिक रूप का साक्षात्कार करना आध्यात्मिक दृष्टि है।

टक्कर मारना – आन्तरिक कमजोरी

यदि दो रेलगाड़ियाँ, जिनका इंजन और डिब्बे ठीक हैं, चालक भी कुशल है और पटरियाँ भी सही हैं तो चाहे वे कश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा भी साथ-साथ करें तो भी सफलतापूर्वक मंजिल प्राप्त कर लेंगी, परन्तु यदि एक के चालक, इंजन, डिब्बों के जुड़ाव या पटरी में कोई भी कमी-कमजोरी आ जाए तो वह अपना पथ छोडकर दाएँ, बाएँ टकराएगी या धीमी चलेगी या खड़ी हो जाएगी। इस प्रकार दूसरों को व्यवधान पहुँचाएगी। हम सभी मानव भी रेलगाड़ियों की तरह ही जीवन-यात्रा पर हैं और एक-दो के साथ-साथ हैं। हमारा भी अपना-अपना निर्धारित मार्ग और लक्ष्य है परन्तु फिर भी कई बार साथी जीवन-यात्री के साथ टक्कर हो जाती है। कारण यही है कि हम अपने मन की चंचलता, बुद्धि की कमजोरी और संस्कारों की विकृति के कारण अपना लक्ष्य, अपना पार्ट, अपना मूल्य और अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं। टक्कर मारने वाला दिखने में तो शक्तिशाली लगता है परन्तु है अन्दर से कमजोर, खाली, खोखला क्योंकि लक्ष्य तक निर्विघ्न पहुँचने के लिए जिस दृढ़ता की जरूरत है उसका उसमें अभाव है और वह बीच राह में अटक कर दूसरों को भी अटकाता है। समझदार वही है जो इस प्रकार अटकने वालों पर रहम करे, उनके साथ न उलझे, अपने को मोल्ड कर ले, असुविधा का सामना करते हुए भी अपनी यात्रा जारी रखे और समय से पहले मंजिल पर पहुँचने का जज्बा बनाए रखे। ❖

गतांक से आगे

त्याग व सेवा की मूरत माता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

एक माँ-बाप ने अपने पुत्र को संदेश दिया कि 1. जिस दिन तुम हमें बुढ़ापे की लाचार अवस्था में देखो, धैर्य रखना और हमें समझने की कोशिश करना। 2. जब हम कोई बात भूल जायें या भूल करें तो अपने बचपन की बातें याद करना और हम पर क्रोध नहीं करना। 3. जब हम बूढ़े हो कर चल न पायें तो अपने बचपन का पहला कदम याद करना और हमारा सहारा बनना। 4. जब हम बीमार हो जायें और पैसा खर्च करना पड़े तो अपने बचपन के वो दिन याद करना, जब तुम्हारी बीमारी में सारी-सारी रात जग कर हम सेवा किया करते थे।

सवाल उठता है कि उन माँ-बाप को अपने पुत्र से ये बातें क्यों कहनी पड़ीं? क्योंकि आज नई पीढ़ी की मानसिकता को देखते हुए वृद्ध हो रहे माँ-बाप अपने भविष्य से डरने लगे हैं। उनका बेटा बुढ़ापे की लाठी बनने से पीछे हटने लगा है अत: माँ-बाप अर्जित धन को बुढ़ापे की लाठी बनाने लगे हैं परन्तु बेटा इस सहारे (लाठी) को भी छीनने को तत्पर रहता है। बेटा सेवा में पीछे हटता है और बाप का मेवा (धन) पाने को आगे बढ़ता है, यह कलियुगी विरोधाभास बाप को दुख देता है। बेटा माँ-बाप की हिमाकत (बेइज्जती) करता है परन्तु माँ फिर भी बेटे की हिमायत (तरफदारी) करती है।

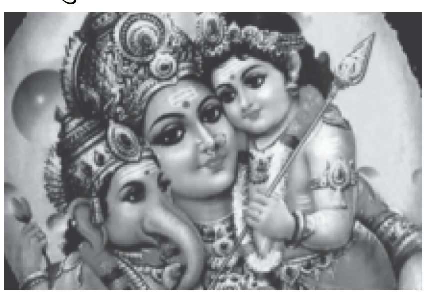

आज सबसे अधिक उपेक्षित है माँ

स्कूल में एक लड़के को टिफिन देने उसकी विधवा माँ आई क्योंकि वह लड़का माँ से रूठ कर टिफिन नहीं लाया था। उस माँ की एक ही आँख थी। शाम को वह लड़का घर में अपनी माँ से खूब लड़ा कि तुम स्कूल क्यों आई, तुम्हारे जाने के बाद सब ने मेरा मजाक उड़ाया कि तेरी माँ की तो एक ही आँख है। वह माँ सब्जी बेच कर अपने बच्चे को पाल रही थी परन्तु बेटे को एक आँख वाली माँ बिल्कुल पसन्द नहीं थी। माँ की तपस्या रंग लाई और बेटा पढ़-लिख कर विद्युत विभाग में इंजीनियर बन गया। उसने माँ से बताए बिना किसी लड़की से लव-मैरिज कर ली। माँ कुछ कह न सकी। शादी के बाद बेटा-बहू किराए पर मकान ले कर अलग रहने लगे और माँ को तो जैसे भूल ही गए। माँ एक बार बेटे से मिलने उसके घर गई तो बेटे ने कहा कि तुम यहाँ मत आया करो, अड़ोस-पड़ोस वालों ने देख लिया तो जैसा मजाक स्कूल में होता था, वैसी ही स्थिति यहाँ भी हो जायेगी। मैं कभी-कभी खुद ही आ जाया करूँगा परन्तु वह कभी भी माँ से मिलने नहीं गया। बुढ़ापे में माँ सड़क के किनारे सब्जी बेचती रही। एक दिन माँ के दो पड़ोसी विद्युत विभाग में उसके बेटे से मिलने आये और कहा कि तुम्हारी माँ सख्त बीमार है, फौरन किसी डाक्टर को लेकर आ जाओ। बेटा जब माँ के पास पहुंचा तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी। दाह संस्कार के बाद बेटे ने माँ के थैले को खोला तो उसमें कांपते हाथों से लिखी एक चिट्ठी मिली। दो दिन पहले माँ ने बेटे को लिखा था कि बेटा, तीन साल की उम्र में दुर्घटनावश तुम्हारी एक आँख नष्ट हो गई थी। एक आँख का नहीं होना तुम्हारे जीवन की खुशी छीन सकता था। अत: मैंने अपनी एक आँख तुम्हें लगवा दी थी। मैं यह बात तुम्हें कभी नहीं बताना चाहती थी। अब मैं बीमार हूँ और लगता है, बचूँगी नहीं। मैं बस यह चाहती हूँ कि तुम मुझे कभी-कभी याद कर लिया करो। यदि यह चिट्ठी तुम पढ़ पाए, तो उम्मीद है, तुम कभी-कभी मुझे याद कर लिया करोगे। मेरी दुआएं सदा तुम्हारे साथ रहेंगी। आज समाज में इससे मिलती-जुलती कितनी ही घटनाएँ माँ व बेटे के सम्बन्ध में घट रही हैं परन्तु

माँ की चुप्पी के कारण दूसरों को इन हृदयविदारक बातों का पता नहीं चल पाता। कई बार बच्चे के दूर जाने पर माँ चुपके-चुपके रो लिया करती है। चल रहे कलियुग में जितने भी रिश्ते हैं, उनमें सबसे ज्यादा उपेक्षित व पीड़ा या वेदना को सहन करने वाला रिश्ता माँ के नाम से जाना जाता है।

बचत का गुण

माता में कई विशेष गुण होते हैं जिनमें एक है बचत का गुण। वह सीमित साधनों से घर के खर्चे चलाती है और फिर भी कुछ न कुछ पैसा भविष्य के लिए जोड़ती रहती है। उसका पति अचंभा करता है कि इतने कम पैसे में घर चला कर यह इतना पैसा जोड़ कैसे लेती है! माँ अन्नपूर्णा भी है तो कामधेनु भी। वह बच्चे को अलग से पॉकेट-मनी दे कर खुश करती है, ससुराल से आई बेटी को सौगातें देती है और धर्म-कर्म के नाम पर कुछ पैसा गुप्त दान कर अपने परलोक का भी बीमा कर लेती है। पति महंगाई से परेशान रहता है और घर के खर्चों में कटौती करता है परन्तु पत्नी तो फिर भी युक्ति से कुछ न कुछ बचा ही लेती है। बेटा जब यात्रा पर जा कर लौटता है तो बाप उससे पॉकेट का हिसाब लेता है कि कहाँ-कहाँ कितना खर्च किया परन्तु माँ तो उसके पेट का हिसाब लेती है कि कहाँ-कहाँ क्या खाया, कहीं भूखा तो नहीं रहा। नौकरी लगने पर बेटे को समझ में आता है कि शौक तो माँ-बाप के पैसे से पूरे होते थे, अपने पैसे से तो केवल जरूरतें पूरी होती हैं। पुत्र जब नौकरी पर दूसरे शहर जाता है तो सोचता है कि माँ से दो पल की जुदाई सही नहीं जाती, पता नहीं मेरी बहनें विवाह के बाद यह जुदाई सहने की शक्ति कहाँ से लाती हैं! मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड का यह कथन है कि लड़के जीवन भर दूसरी महिलाओं में परोक्ष रूप में अपनी माँ तलाशते रहते हैं। वे कभी भी अपनी माँ के प्रभाव से मुक्त नहीं होते।

ममता कभी कम नहीं होती

एक बच्चे ने माँ से कहा, आज स्कूल में टीचर कह रही थीं कि बच्चे जैसा देखते हैं, वैसा ही सीखते हैं, क्या यह सच है माँ? माँ ने कहा, हाँ बेटा, यह सच है। बच्चा आँसू बहाने लगा। माँ ने कारण पूछा तो बच्चा बोला, माँ, तुम पापा को समझाना कि वे दादी पर गुस्से में चिल्लाया न करें और उनकी इज्जत किया करें क्योंकि मैं वह नहीं सीखना चाहता, जो पापा ने सीखा है। माँ, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं। अभी तो बच्चा माँ की कद्र करता है परन्तु बड़ा होने पर बच्चे का प्रेम कम हो जाता है जबकि उसकी माँ की ममता कम नहीं होती। ममता को माँ-मता अर्थात् मां की कल्याण की मत भी कह सकते हैं।

यह गिरावट की अति ही कही जायेगी कि आज महिलाएं उधार की कोख (Surrogate Mother) से अपने शिशु को जन्म दिलाती हैं ताकि उनकी फिगर (शारीरिक सुन्दरता) खराब न हो। यह अद्भुत बात है कि स्वयं शिव परमात्मा जिन्हें अपना शरीर नहीं है, वे अपने आत्मा बच्चों की आत्मिक फिगर ठीक करने अर्थात् जीते जी नया जन्म दिलाने के लिए उधार का शरीर लेते हैं, जिसे ब्रह्मा कहा जाता है। इस गुह्य कार्य से भविष्य सतयुग में श्रेष्ठ शारीरिक व आत्मिक फिगर वाले ऐसे कायाधारी पैदा होते हैं जिनकी ये दोनों फिगर, दो युगों तक सुख देती रहती हैं।

एक माता के तीन बच्चे थे। बीच वाली बच्ची ने अपनी माँ से कहा, मम्मी, आप मुझे जितना प्यार करती हो, मैं आपको उससे भी ज्यादा प्यार करती हूँ। माँ ने चकित हो कर कहा कि नहीं बेटी, मैं तुम्हें ज्यादा प्यार करती हूँ। बच्ची बोली, मम्मा, आपको टिंकू, चिंकू और मुझे, तीन बच्चों को प्यार करना होता है जबकि मेरे पास तो एक ही मम्मी है जिसे मैं पूरा प्यार करती हूँ। माता हैरान रह गई। वह बच्ची फिर पार्क में खेलने गई। वहाँ एक बुजुर्ग ने पूछा, बेटी, आप कहाँ रहती हो? बच्ची ने एक घर की तरफ इशारा किया और बोली, वो रहा मम्मी वाला घर। बच्ची ने पापा वाला घर क्यों नहीं कहा? क्योंकि बच्चे माँ के ज्यादा करीब होते हैं। वे अपनी हर अच्छी-बुरी बातें माँ से बताते हैं, पिता से नहीं। माता गुजर जाए तो घर की सारी व्यवस्थाएं उजड़ जाती हैं परन्तु पिता गुजर जाए तो माता किसी तरह संघर्ष करके भी घर को बिखरने नहीं देती। **क्रमशः**

बोझ समाप्त कर उड़ाने वाले बाबा

ब्रह्माकुमार सुभाष कुमार झा, आगरा म्यूज़ियम, आगरा

मेरा जन्म सन् 1971 में ताज की नगरी आगरा के समीप एक गाँव में गरीब तथा साधारण परिवार में हुआ। भक्तिभाव के संस्कार परिवार से विरासत में मिले। पिताजी के साथ मैं आस-पास के गाँवों में श्रीकृष्ण-सुदामा संवाद, प्रह्लाद भक्त की गाथा, अग्नि पुराण, समुद्र-मन्थन व रामायण-भागवत के चरित्रों का चित्रण कीर्तन के माध्यम से किया करता था। मेरे पिता की पहचान सुदामा व मेरी पहचान सुदामा-पुत्र से हुआ करती थी। शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए सन् 1989 में आगरा शहर आना हुआ। गरीबी के कारण स्वयं कार्य करते हुए शिक्षा व रोजगार के लिए संघर्ष में लग गया। स्नातकोत्तर के बाद 'प्रबन्धन' में डिप्लोमा किया तथा जन-संचार व पत्रकारिता की पढ़ाई की लेकिन परमात्म गुणगान का आदी मन अतृप्त ही रहता था।

अपने को करो प्रभु-अर्पित

एक बार मेरा एक कार्यक्रम में जाना हुआ जहाँ एक श्वेत वस्त्रधारी व्यक्तित्व से मुलाकात हुई। उनके दिव्य गीत का मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गीत के बोल थे, 'मेरे प्यारो बनो राजयोगी...।' कार्यक्रम के बाद उस व्यक्तित्व के आकर्षणवश उसके आवास तक पहुँच गया। उनके सानिध्य में ज्ञान सीखते हुए यह निश्चय हुआ कि परमात्मा शिव इस धरा पर प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन के माध्यम से स्वर्ग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। तब से जीवन जीने की कला प्राप्त हो गई और मन ने कहा, तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो, यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इस सहारे को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।

देहत्याग – पुराने वस्त्र उतारने जैसा

जीवन की बागडोर बाबा को सौंप आनन्द के साथ जीवन-यात्रा में चल रहा था कि अचानक 6 सितम्बर, 2013 को दिल्ली एम्स के लिवर विभाग के वरिष्ठतम डॉक्टर आचार्य जी ने बताया कि आपको लिवर सिरोसिस है। जान बचाने के लिए लिवर प्रत्यारोपण अति शीघ्र बेहद जरूरी है। इसके लिए दो प्रबन्ध करने जरूरी थे – पहला, लिवर पीस के दाता का और दूसरा, भारी भरकम धनराशि का। मुझे एम्स से निकाल इन्द्रप्रस्थ अपोलो, नई दिल्ली में भर्ती करा दिया गया। अकेले होने का अहसास मेरे अन्तर्मन में गहरी पैठ बनाता जा रहा था। लग रहा था कि जीयें तो जीयें कैसे? एक-एक पल वर्षों के समान महसूस हो रहा था। तभी गीता के भगवान के ये शब्द कानों में गूँज उठे –

हे महाभाग, इस देह का त्याग, पुराने वस्त्र उतारने जैसा।
जीवात्मा का नूतन जन्म, नये परिधान के धारण जैसा ।
देह भी चोला, वस्त्र भी चोला, है ये कुछ विचारने जैसा।
चोले के इस परिवर्तन पर, क्या है धीरज हारने जैसा ।।

पराजय स्वीकार कर मौत चली गई

इन ज्ञान-पंक्तियों से मन रोमांचित हो नन्हे मृग-शिशु की भाँति कुलाचें भरने लगा और शरीर का रोम-रोम पुलकित हो गया। मुझे अपने सामने अपार आकर्षक, दिव्य, मनोहारी, ज्योति (प्रकाश पुंज) स्वरूप परमात्मा शिव का स्पष्ट दर्शन हुआ जो हृदयस्पर्शी आह्वान कर रहे थे, "तुम सर्वशक्तिवान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिवान हो, कालों का काल महाकाल मैं ही तो हूँ, घबराते क्यों हो? बच्चे, तुम चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ..।" मन में विजय का भाव लिए मैं उस तेजपुंज की तरफ खिंचता चला गया और मुझे महसूस हुआ कि मौत अपनी पराजय स्वीकार कर नतमस्तक हो वापस चली गई है।

बोझ सौंप दो मुझे

तभी मुझे बताया गया कि लिवर प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक हो गया है। मैं बाबा को हृदय की गहराइयों से बार- बार शुक्रिया करता हूँ और सभी ब्रह्माकुमार भाई-बहनो तथा अनुज व मित्रों का भी बहुत-बहुत धन्यवादी हूँ जिन्होंने मेरी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष मदद की। इस घटना से मुझे अनुभव हुआ कि भगवान हमारा बोझ लेकर, हमको फरिश्ते समान बना कर इस साकार दुनिया से उड़ा कर ले जाना चाहते हैं। बाबा ने अपने महावाक्यों में कहा है, बच्चे, अपना बोझ मुझे सौंप, आप हल्के फरिश्ते बन, उड़ते रहो और उड़ाते रहो। आज आवश्यकता इसी बात की है कि हम परमात्मा पिता के प्रति पूरी रीति से समर्पित होकर, उनका हाथ और साथ लेकर चलें तो मुश्किलें अपने आप रास्ता छोड़ देंगी। ❖

राजयोग से होती हैं समस्याएँ हल

ब्रह्माकुमार कैलाशचन्द्र यादव, सेवानिवृत्त कमान्डेन्ट, जयपुर (वैशालीनगर)

मैं ने एक साधारण परिवार में सन् 1945 में जन्म लिया। मेरे दादाजी वेद-शास्त्रों के विद्वान पंडित थे और बचपन में मैंने उन्हें आगंतुक विद्वानों से शास्त्रार्थ करते देखा था। इससे मुझमें भी ईश्वर के बारे में जानने की इच्छा पनपी थी। घर के नजदीक दादाजी का बनाया हुआ आश्रम था, उसमें साधु-संत हमेशा रहते थे और भगवान के भजन व कीर्तन चलते रहते थे। एक बार एक महात्मा ने मुझे कहा कि अगर आप गीता के श्लोक कंठस्थ सुनाओगे तो प्रसाद मिलेगा। तब मैंने एक दिन में 5 श्लोक कंठस्थ करके सुनाये। फिर मैं रोजाना याद करके सुनाता रहा। इस प्रकार गीता के दो अध्याय कंठस्थ हो गए यद्यपि मुझे उनके गहन भावार्थ के बारे में अधिक ज्ञान नहीं था। बचपन के ये संस्कार बाद में मुझे ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में ले आये। एक वर्ष से अधिक समय से मैं इस संस्था से जुड़ा हुआ हूँ और यहाँ सिखाए जाने वाले योग का प्रतिदिन अभ्यास कर रहा हूँ। जब मैं प्रात: 3 बजे उठकर, हाथ-मुँह धोकर आत्मा को परमात्मा के सानिध्य में ले जाता हूँ तो मुझे आत्मा के सातों गुणों का अनुभव होता है। मन उमंग-उत्साह से भर जाता है और शांति व सुख की अनुभूति होती है।

अमृतवेले योग के बाद 4 बजे मैं घूमने निकल जाता हूँ और घूमते-घूमते भी अपना ध्यान परमपिता परमात्मा में केन्द्रित रखता हूँ। उस समय यदि दैनिक दिनचर्या की कोई समस्या याद आ जाती है तो उसका निवारण भी विचारों में आ जाता है। इस प्रकार प्रभु-स्मृति से समस्यायें तो हल होती ही हैं, साथ ही दिनभर में कार्य पूर्ण करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। किसी भी कार्य को अगर शिव बाबा की याद से प्रारम्भ करते हैं तो वह निर्विघ्न रूप से पूरा हो जाता है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है –

मैं प्रतिदिन बाबा की मुरली सुनने अपने घर से सेवाकेन्द्र पर स्कूटी से जाता हूँ। एक दिन मेरी स्कूटी की चाबी गिर गई और मैं स्कूटी को सेवाकन्द्र से वापस नहीं ला सका। सुबह के समय कोई चाबी बनाने वाला भी नहीं मिलता। मैं यह सोचकर घर पैदल ही आ गया कि शायद डुप्लीकेट चाबी घर पर मिल जाए। घर पर सभी सदस्यों से स्कूटी की डुप्लीकेट चाबी के बारे में पूछा। सभी ने जवाब दिया कि 15 वर्ष पहले खरीदी स्कूटी की डुप्लीकेट चाबी हमारे पास नहीं है। मैंने बाबा का ध्यान कर तलाश करना आरंभ किया तो पहले ही प्रयास में स्कूटी की डुप्लीकेट चाबी मिल गई। इस प्रकार से बाबा ने मेरी यह समस्या सुलझा दी।

मेरी आस्था है कि अगर बाबा को सच्चे मन से याद करके कोई भी न्यायसंगत व उचित कार्य करें तो उसे पूर्ण करने में अवश्य ही कोई बाधा नहीं आएगी। ❖

नारी का सर्वांगीण विकास

ब्रह्माकुमारी डॉ.सविता, शान्तिवन

वर्तमान 21वीं सदी को विकास की सदी कह सकते हैं, जहाँ महिलाएँ हर क्षेत्र में उपस्थित हैं। हालाँकि उन्हें सम्पूर्ण अधिकार आज भी नहीं हैं इसलिए अपने विकास और वृद्धि के लिए उन्हें हरपल मज़बूत, जागरूक और चौकन्ना रहने की ज़रूरत है। विकास का एक मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समर्थ बनाना है क्योंकि एक सशक्त महिला अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के साथ ही देश का बेहतर भविष्य भी सुनिश्चित करती है। पूरे देश की जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी आधी है और महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में इन्हें स्वतंत्रता, सुरक्षा और उपयुक्त वातावरण की ज़रूरत है। महिला जगत का सर्वांगीण विकास महिलाओं के सशक्तिकरण के द्वारा ही हो सकता है।

निर्णय लेने में सक्षम

महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम सशक्तिकरण से क्या समझते हैं? सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें यह योग्यता आ जाती है कि वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज की सभी कुरीतियों, रूढ़ियों के बंधनों से मुक्त होकर अपने जीवन की निर्माता स्वयं बनें।

जरूरी है कुप्रथाओं को मारना

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में फैली, उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली उन सभी प्रथाओं को मारना ज़रूरी है, जैसे दहेजप्रथा, भ्रूण हत्या, असमानता, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर धकेलता है। भारत के संविधान में लिखे गये समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है। लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचलित व प्रसारित करना चाहिए।

महिलाओं के प्रति सुविकसित नजरिया

महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मज़बूत हों, इसमें परिवार की अहम भूमिका है। एक बेहतर शिक्षा की शुरूआत बचपन से घर पर ही हो सकती है। महिलाओं के उत्थान के लिए एक स्वस्थ परिवार की ज़रूरत है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, गरीबी और कुरीतियों की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने की रूढ़ी का चलन है। महिलाओं को मज़बूत बनाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिए सरकार सारे कदम उठा रही है। अनेक नये कानून

महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को समाप्त करने के लिए बने हैं। गैर सरकारी संस्थान भी इस दिशा में प्रयासरत हैं। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिए लड़कियों के महत्त्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की ज़रूरत है। इसके साथ ही हमें महिलाओं के प्रति नजरिये को भी सुविकसित करना होगा।

आध्यात्मिकता की अहम भूमिका

नारी के सर्वांगीण विकास में आध्यात्मिकता की भी अहम भूमिका है अर्थात् शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक सभी रूपों में पूर्ण विकसित होकर वह स्वयं का और परिवार का भी उद्धार कर सकती है तथा समाज उत्थान के कार्य में भी सहयोगी बनती है। शारीरिक दृष्टि से महिलाओं को स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। स्वास्थ्य के नियमों का उन्हें ज्ञान हो ताकि वे स्वयं के साथ-साथ बच्चों को, परिवार को संतुलित और स्वास्थ्यवर्धक पोषण प्रदान करें। स्वच्छता के प्रति जागरूक हों। घर के आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखें ताकि मच्छर-मक्खी और रोग फैलाने वाले कीटाणु न फैलें। जब प्रत्येक महिला घर-परिवेश के प्रति अपनी ज़िम्मेवारी समझेगी तभी स्वच्छ, स्वस्थ समाज हो पायेगा।

चारित्रिक सुन्दरता ही स्थाई सुन्दरता

आधुनिक महिलाएँ फैशन, सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग से अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाना चाहती हैं, कुछ हद तक सफल भी होती हैं परन्तु चेहरा मन का दर्पण है। आत्म-विश्वास से भरा प्रसन्न मन, मुख पर कांति लाता है। गुणों का सौन्दर्य, सच्चा सौन्दर्य है। बाहर से सुन्दर पर मन से कुरूप अर्थात् घृणा, ईर्ष्या, द्वेष के भाव रखने वाला कुछ समय ही सुन्दर लगता है फिर यह भ्रम टूटते देर नहीं लगती। चारित्रिक सुन्दरता ही स्थाई सुन्दरता है।

ईश्वर का ध्यान बनाता है निर्भय और सबल

आध्यात्मिकता द्वारा सादगी, सरलता, सहिष्णुता, आत्म-संयम, त्याग, परोपकार, संतोष, पवित्रता, उत्साह, हिम्मत जैसे आंतरिक सौन्दर्य बढ़ाने वाले गुण स्वत: ही विकसित होने लगते हैं। आध्यात्मिकता अंतर्जगत का साक्षात्कार कराती है और आत्म-अवलोकन एवं आत्म-चिंतन से अपनी कमियों को दूर करने और शक्तियों के विकास का अवसर प्रदान करती है। ईश्वर का ध्यान महिला को निर्भय और सबल बनाता है। वह स्वयं को विकट परिस्थितियों में भी सुरक्षित महसूस करती है। आत्म-ज्ञान, दैहिक आकर्षण की जंजीरों से मुक्त होने में सहायक है और इस प्रकार जीवन स्वत: ही श्रेष्ठ विकास की राह पर अग्रसर हो जाता है।

सादा जीवन उच्च विचार

आज इस बात की आवश्यकता है कि नारी अपनी सच्ची स्वतंत्रता को पहचाने, अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाये। सादा जीवन, उच्च सकारात्मक विचार एवं आध्यात्मिकता के पालन से नारी का मानसिक और बौद्धिक विकास होता है, परिणामस्वरूप उसके अशान्त और चंचल विचार शान्त होते हैं, उसकी भावनात्मक स्थिरता बढ़ती है जिससे वह भयमुक्त बनकर अपने परिवार और देश के भविष्य के प्रति सही निर्णय लेने में सक्षम होती है।

नारी को पुन: सम्मानीय पद पर प्रतिष्ठित करने का कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से स्वयं निराकार शिव परमात्मा, पिताश्री ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर कर रहे हैं। परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और योग की शिक्षा से नारी में आध्यात्मिक शक्ति का संचार होने लगता है। अनादि गुणों जैसे कि प्रेम, सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति के अनुभव से उसका सोया स्वमान जागृत हो जाता है और इस प्रकार वह साधारण नारी से शक्ति स्वरूपा शिव-शक्ति बन जाती है। ❖

हर रिश्ते में विश्वास रहने दो;
जुबान पर हर वक्त मिठास रहने दो;
यही तो अंदाज है जिंदगी जीने का;
न खुद रहो उदास, न दूसरों को रहने दो।

साक्षी बनें, निर्णायक नहीं

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

जब हम कोई नाटक या फिल्म देखते हैं तो दर्शकों के बीच बैठकर यह देखते हैं कि मंच पर क्या हो रहा है। इसी तरह से जीवन की यात्रा में चलते हुए बीच-बीच में दर्शक भी बनते जायें। हम मंच पर अभिनेता हैं लेकिन अभिनेता के साथ-साथ हमें दर्शक भी बनना है। दर्शक क्यों बनना है? क्योंकि दर्शक बनने से हम मुक्त रहते हैं। जब हम मुक्त होकर देखते हैं तो पता चलता है कि यह नाटक जो अनवरत रूप से चलता ही रहता है, इसमें हर कलाकार अपनी भूमिका निभा रहा है। हम उसको निर्णायक होकर नहीं देखें। हम जैसे ही निर्णायक होते हैं तो मानो कि हम उसकी भूमिका से जुड़ जाते हैं।

साक्षी होकर दूसरों की भूमिका को देखते हुए जब हम अपना अभिनय करेंगे तो वो भूमिका रचनात्मकता से भरी होगी क्योंकि तब हमारा मन स्थिर और सबल होगा। एक अशांत मन वाला व्यक्ति कभी भी रचनात्मक नहीं हो सकता।

मान लो, अभी मैं अच्छे मूड में हूँ। आपने ऐसा कुछ कहा जिससे मेरा मन खराब हो गया। फिर मैं कहती हूँ, ये तो स्वाभाविक है, उन्होंने ऐसा बोला तो मुझे बुरा लगेगा ही। इसका मतलब यह है कि मेरे अंदर वो शक्ति और समझ ही नहीं है कि मैं अपनी भूमिका कैसे प्ले करूँ। मेरी भूमिका आपकी भूमिका पर निर्भर हो गई। आप जैसी भूमिका निभायेंगे फिर उसी हिसाब से मैं अपनी भूमिका अदा करूँगी। सारे दिन में स्वयं को देखें कि अपनी भूमिका को रचनात्मकता से कर रहे हैं या दूसरों पर निर्भर होकर कर रहे हैं। दूसरों की भूमिका में हम इतने ज्यादा शामिल हो जाते हैं कि उस समय अपनी भूमिका निभाना ही भूल जाते हैं और दूसरे के रोल पर निर्णायक होने लगते हैं।

दिन में हम एक बार कोशिश करके देखें कि हमें किसी की भी भूमिका का फैसला नहीं करना है जैसे कि उसको ऐसे करना चाहिए, ऐसे नहीं करना चाहिए आदि-आदि। एक दिन भारी लग रहा हो तो एक घंटे के लिए भी यह करके देख सकते हैं।

आपको उस एक घंटे के अंत में पता चलेगा कि आपकी बहुत सारी ऊर्जा, जो व्यर्थ में नष्ट हो जाती थी, बच गई है। जब हम निर्णायक होते हैं तो हमारी सोच की किस्म भी सकारात्मक नहीं रहती क्योंकि उस समय हम लोगों की कमी-कमजोरियाँ बहुत ज्यादा देखते हैं। एक-एक की कमजोरी देखते-देखते हमारे मन की हालत कैसी हो जाती है? अत: व्यवहार में साक्षी भाव का अभ्यास करके देखें कि इससे हमें कितना फायदा होता है, इससे हमारे अंदर कितनी शक्ति भरती है।

जब दूसरों को देखना बंद कर दिया तब मैं स्वयं को देखना शुरू करती हूँ कि मेरे मन में क्या चल रहा है। कई लोग कहते हैं कि हम अपने विचारों को देख ही नहीं पाते हैं। मैं पूछती हूँ कि मैं क्यों नहीं अपने विचारों को देख सकती हूँ? आप जैसे सहज चल रहे हो, वैसे चलते जाओ, सिर्फ यह ध्यान दो कि मैं क्या सोच रहा हूँ, उसको जानने की कोशिश करो और जैसे ही आपको पता चले कि मैं यह सोच रहा हूँ कि इनको ऐसे नहीं करना चाहिए था। जैसे ही इस प्रकार के विचार आयें तो आप स्वयं को कहें कि बस करो, अभी मुझे एक घंटे तक ऐसा कुछ भी नहीं सोचना है।

एक दिन के लिए आप कोशिश करके देखो कि हमें दूसरों के संबंध में ज्यादा कुछ नहीं सोचना है, फिर आप अपने विचारों को देखो, फिर आप इससे उत्पन्न होने वाली

अनुभूति को चेक करो। इसे 'निश्चलता' कहा जाता है। निश्चलता क्या है? मौन क्या है?

मौन भी दो प्रकार का होता है। एक है मन से मौन होना और एक है आवाज से मौन होना। मन के मौन का अर्थ यह नहीं है कि हम सोचना ही बंद कर दें। कई बार भाई-बहनें मेडिटेशन के समय यह प्रयास करते हैं कि विचार उत्पन्न ही न हों, जो कि वास्तव में संभव ही नहीं है। सिर्फ साक्षी होकर देखें, जैसे ही आप अपने विचार को साक्षी दृष्टि से देखेंगे, उसकी गति कम होती जायेगी और सोच का स्तर अच्छा हो जायेगा। ❖

पति परमेश्वर या परमेश्वर पति

ब्रह्माकुमारी पूजा, रोहतक

जब एक लड़की की शादी होती है तो उसे समझाया जाता है कि बेटी, ये पति ही तुम्हारा परमेश्वर है, गुरु है... सब कुछ है। अब ये जो भी कहे, तुम्हें मानना है। और वह मासूम लड़की उसे ही परमेश्वर समझ अपना सब कुछ समर्पित कर देती है। चाहे पति से सुख मिले, चाहे दुख लेकिन वह उसका साथ नहीं छोड़ती।

हमारा समाज पुरुषप्रधान है जहाँ पुरुष को श्रेष्ठ तो नारी को निम्न स्तर की समझा जाता है लेकिन यह बात सोचने की है कि अगर पति ही परमेश्वर है तो उससे सदा सुख ही मिलना चाहिए परन्तु क्या हर पति अपनी पत्नी को सुख दे रहा है?

वह शराब पीकर घर में लड़ाई-झगड़ा करता है, औरत को मारता-पीटता है, ऐसे में हम उसे परमेश्वर कैसे कह सकते हैं? अगर पति ही परमेश्वर है तो धरती पर न जाने कितने भगवान हो जाएँगे! जब कोई दुख आए तो हम बैठ पति को याद करें लेकिन नहीं, हम भगवान को याद करते हैं और कहते हैं, वह एक है।

एक कन्या जब तक पवित्र है, लोग उसे पूजते हैं, उसे देवी मानते हैं, उसके पैर छूते हैं माना पवित्रता की पूजा करते हैं और वही कन्या जब विकारों में जाती है तो उसे सबके पैरो में गिरना पड़ता है। इसका अर्थ यही हुआ कि पवित्रता किसी भी इंसान की सबसे बड़ी शक्ति है।

एक तरफ कहते हैं, शादी तो मन का सम्बन्ध है परन्तु अगर कोई मन से परमेश्वर को ही पति मान ले तो उसे दुनिया स्वीकार नहीं करती है। जैसे मीरा के लिए कहा जाता है, उसने पतित समाज को न देख अपनी पवित्रता की रक्षा की और परमेश्वर को ही पति मान लिया। परमेश्वर पति ने हर कदम पर उसकी मदद की और काँटों को फूल व जहर को अमृत बना दिया। दुनियावी विकारी इंसान में इतनी ताकत कहाँ कि वह हर समय, हर मुसीबत में किसी की रक्षा कर सके। सत्य तो यह है कि जिस किसी ने भी उस परमात्मा में मन लगाया है, परमात्मा ने हर कदम पर उसका साथ निभाया है।

सांसारिक पति को परमेश्वर मानने का अनुभव हर एक ने किया है। क्यों न इस अन्तिम जन्म में हम परमेश्वर को पति मान उसका अनुभव करें। वह हमारे जीवन में खुशी, प्रेम, आनंद भर देता है। उसे ही पतित पावन कहते हैं। वही सब आत्माओं रूपी सीताओं को रावण की जेल से छुड़ाने वाला राम है।

ईश्वरीय ज्ञान कहता है कि हम न स्त्री हैं, न पुरुष हैं। हम तो एक चैतन्य आत्मा हैं जिसका सच्चा-सच्चा सम्बन्ध एक परमात्मा से ही है। परमात्मा हमारे एक जन्म की पवित्रता पर खुश होकर हमें 21 जन्मों तक सुख का वर्सा देते हैं। क्यों न इस एक जन्म में पवित्रता का अनुभव करें, ये जन्म विकारों में जाने का नहीं बल्कि परमात्मा को पहचान उससे सर्व सम्बन्ध जोड़ने का है। कहते हैं, 'जो पिया के साथ है उस पर सुखों की बरसात है...।' इस कलियुगी दुनिया में वही सुखी है जिसका साथी स्वयं भगवान है। ❖

राजयोग से बनते हैं रॉयल संस्कार

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर

हम सबकी यह मान्यता है कि एक छोटा बच्चा कोरा कागज होता है। उसे बड़ा होकर कैसा बनना है, उस कागज पर यह लिखत समाज, माता-पिता और हम-आप सब मिलकर लिखते हैं परन्तु कभी-कभी अपवाद रूप ऐसे भी बच्चे हमारे सामने आते हैं जिनके मन रूपी कागज की लिखत इतनी उत्कृष्ट होती है कि समाज उससे प्रेरित और प्रभावित होने लगता है। आज हम चर्चा कर रहे हैं रादौर (जिला करनाल, हरियाणा) के 10 वर्षीय बालक सत्यम की जिसकी प्राचार्या बहन टेसविन ने नैतिक शिक्षा के फाइनल पेपर में उसकी विशेषताओं पर एक निबन्ध तैयार करके, विद्यार्थियों को उस निबन्ध के आधार से बनाए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने को कहा। निबन्ध में इस बच्चे की समयबद्धता, नियमितता, स्वच्छता, मधुरवाणी, नम्रता, सुन्दर हस्तलेख, सुन्दर गृहकार्य, सहनशीलता, धैर्य, आत्म-नियंत्रण, वक्तृत्व कला, आज्ञाकारिता, नैतिकता और गरीब बच्चों की आर्थिक सहायता – आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

ब्रह्माकुमार सत्यम अपने हमजिन्स (हम उम्र बच्चों) को यह बताना चाहते हैं कि "मत देखो नन्हीं-सी काया, हिम्मत है भरी भुजाओं में।" भुजाओं से भी अधिक यह हिम्मत वास्तव में आत्मा में भरी है। पढ़िए उनका अनुभव, उन्हीं के शब्दों में – **सम्पादक**

प्रिय मित्रो, आप सबके साथ अपना बेहद खूबसूरत अनुभव शेयर करना चाहता हूँ। 'राजयोग मेडिटेशन' हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए। परमपिता परमात्मा का हमारे जीवन में, हमारे परिवार के सदस्यों में सर्वोच्च स्थान होना चाहिए। क्यों कहता हूँ ऐसा... क्योंकि मैंने उनके महत्त्व को अपने जीवन में अनुभव किया है। जब हमारे मन व बुद्धि की तार परमपिता परमात्मा से जुड़ती है तब हम उनके समीप रह, उनके प्यार, गुण व शक्तियों का अनुभव करते हैं। जिसका हम संग करते हैं उसका हमारे ऊपर रंग न चढ़े, यह तो असम्भव है। जब हम मेडिटेशन करते हैं अर्थात् परमपिता के समीप रहते हैं तो चूँकि वह गुणों व शक्तियों का सागर है तो उनके गुण स्वतः ही हमारे भीतर आने लगते हैं जिसकी महसूसता हमारे आस-पास रहने वाले भी करते हैं। ऊपर चर्चित निबन्ध में वर्णित मेरी विशेषताएँ शिवबाबा की देन हैं।

बाबा का शुक्रिया

इन गुणों व संस्कारों से प्रभावित हो प्राचार्या जी ने मेरी मम्मा को विशेष सम्मान के साथ विद्यालय के विशेष कार्यक्रम में, विशेष अतिथि के रूप में निमन्त्रण दिया जहाँ उन्हें 'ग्रेट मदर' कहकर सम्बोधित किया परन्तु मेरी मम्मा ने इसका सम्पूर्ण श्रेय परमपिता परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव बाबा को तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दी जाने वाली निःशुल्क 'राजयोग मेडिटेशन' की शिक्षा को दिया। इससे प्रभावित हो मेरे कई अध्यापक व साथी इस संस्था से व 'पीस ऑफ माइंड' चैनल से जुड़े। मैं दिल की गहराइयों से अपने खुदादोस्त, शिवबाबा का बारम्बार शुक्रिया करता हूँ।

दुआओं का हकदार

सचमुच पारस तो लोहे को छू कर उसे भी सोना कर

देता है। प्यारे शिवबाबा के गुणों का असली अन्दाजा तो तब लगता है जब मैं संस्था की दादियों तथा समर्पित भाई-बहनों को देखता हूँ...। पर मैं दिल से अपने माता-पिता का भी सदैव आभारी रहूँगा क्योंकि उनके सहयोग व आशीर्वाद के बिना तो कुछ भी सम्भव नहीं। मुझे अच्छे से याद है, जब मैं अपनी मम्मा के साथ ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाता था तो सभी मेरी मम्मा को कहते थे, ढाई-तीन वर्ष के बच्चे को कोई मेडिटेशन, राजयोग सिखाता है? पर उन्होंने सदा मुझे इस विद्यालय में जाने के लिए प्रेरित किया। वे मुझे कभी भी मुरली (परमात्मा के महावाक्य) मिस करने नहीं देते। वे कहते हैं, परमात्मा तो हम सबके माता-पिता हैं। उनसे अधिक अच्छे संस्कार और पालना आपको कोई नहीं दे सकता। जब तक आप परमपिता से जुड़े हैं, मैं बिल्कुल निश्चिंत हूँ। वैसे भी बीज से अलग होने से पत्ते का अस्तित्व ही खत्म हो जाता है... इसलिए आप सदैव परमपिता से जुड़े रहना...। सचमुच मेरी मम्मा के इस फैसले ने मुझे परमपिता परमात्मा का प्यार और साथ तो दिया ही और दोनों विद्यालयों, दोनों परिवारों (लौकिक व अलौकिक) में सर्व के प्यार व दुआओं का भी हकदार बना दिया।

दिल से सर्व माता-पिता से मेरा विनम्र निवेदन है, एक बार राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा को अपने तथा अपनी सन्तान के जीवन का अभिन्न अंग बनाकर तो देखिये, यकीनन आपका अनुभव मुझसे भी कहीं बेहतर होगा। ❖

प्रकृति के किराये की किश्तें

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, मुम्बई (पनवेल)

आज समाज में रहने वाला हर मनुष्य लोन शब्द का अर्थ जानता है और उसकी किश्तें कैसे चुकाई जायें, यह भी जानता है। लोन के अलावा यदि घर किराये पर लिया हुआ हो तो वह किराया भी हर महीने दिया जाता है। यदि किराया समय पर न दिया जाए तो नतीजा अच्छा नहीं होता परन्तु आज मनुष्य ने जो सबसे बड़ा लोन (शरीर) प्रकृति से लिया हुआ है, जिस के बिना सृष्टि रंगमंच पर पार्ट प्ले करना असम्भव है, उसकी किश्तें चुकाना वह भूल गया है।

आत्मा जब पार्ट प्ले करने के लिये इस सृष्टि रंगमंच पर आई तो प्रकृति ने उसके रहने के लिए बहुत सुन्दर घर (शरीर) किराये पर दिया। इस घर में आत्मा की सुख-सुविधा के लिए हर अमूल्य वस्तु सुन्दर ढंग से सजाकर दी गई। देखने, सुनने, खाने, काम करने और चलने के लिये साधनों (कर्मेन्द्रियों) को प्रकृति मालिक ने बड़ी मेहनत और लगन से इसमें निर्मित किया परन्तु किराए पर देते समय प्रकृति ने शर्त रखी कि इस घर में कोई भी ऐसी वस्तु न लाना, न रखना जिससे यह घर समय से पहले टूट कर खत्म हो जाये। हमने शर्तें मानकर रहना शुरू किया।

समय बीतता गया। आत्मा रूपी पुरुष भूल गया कि यह घर किराये का है और इतना खुदगर्ज हो गया कि मालिक को धोखा देकर घर अपने नाम करवा लिया और छाती ठोक कर सबको कहने लगा कि यह मेरा घर है। किराया देना तो दूर की बात, उसने घर ही छीन लिया और समझौते की शर्तें भूलकर सभी गन्दी वस्तुएँ (शराब, तम्बाकू, माँसाहार) घर पर लाने लगा जिससे घर की बनावट समय से पहले ही बिगड़ने लगी।

आखिर कब तक कोई सहन करेगा। वर्तमान संगमयुग पर परमात्मा पिता, जो इस लोन देने में पूरे साक्षी हैं, आकर हम बच्चों को श्रीमत देते हैं, बच्चे किसी से कोई वस्तु किराये पर लो तो उसकी किश्तें समय पर चुक्ता करो और वस्तु को प्यार से सम्भाल कर मालिक को सही सलामत वापिस करो।

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा का तन किराये पर लिया तो बदले में विश्व की बादशाही अदा की। हम सोचें, इस प्रकृति को हम क्या अदा करें? शिव बाबा कहते हैं, 'बच्चे, सुबह-सायं प्रकृति को शान्ति और पवित्रता के प्रकम्पन दो, यही इस शरीर रूपी घर के किराये की किश्तें हैं। ❖

बन्धन से छुटकारा

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक महिला अपनी बेटी के साथ मेले में लगे स्टॉल देख रही थी, तभी एक ऐसा स्टॉल आया जिसमें बहुत-से रंग-बिरंगे, खूबसूरत पक्षी पिंजरों में बन्द बिकने के लिए रखे हुए थे। महिला ने चहक कर कहा, देखो बेटी, कितने सुन्दर पक्षी हैं, एक हम भी ले चलें।

बेटी ने गर्दन हिलाई, नहीं माँ, घर में, पिंजरे में बन्द पक्षी का घुटता मन दिनभर हमें बद्दुआएँ देगा। हम धरती पर चलने-फिरने वाले मनुष्य जब बन्द कमरे में घुटन महसूस करते हैं तब यह पक्षी तो आकाश में आजाद उड़ने वाला है। इसे बन्द करना पाप है।

यह बात लड़की ने इतने प्रभावशाली तरीके से कही मानो लड़की नहीं, खुद पंछी अपनी पीड़ा बयाँ कर रहा हो। पास ही खड़े एक उच्च अधिकारी ने यह वार्तालाप सुना और मन ही मन लड़की की बात दोहराई, 'यह पाप है', हूँ..हूँ.., फिर इसे उसकी पुरातनपंथी सोच मान कर पक्षी देखने में व्यस्त हो गया। वह अधिकारी पक्षी-प्रेमी था, नहीं, बंधक पक्षी-प्रेमी था।

अब उसके 'पक्षी-संग्रह' में कुछ और पक्षी आ गए। इससे उसका स्टेटस सिम्बल और उच्च बन गया। वह गर्व से भरकर अपने साथियों को पक्षी-संग्रह दिखाता। वह सोचता, पक्षियों को अच्छी खुराक देकर वह पुण्य कमा रहा है। वह कहता, क्या स्वयं पक्षी इतना अच्छा भोजन जुटा सकते हैं, बिल्कुल नहीं।

कुछ समय गुजरा। वह अधिकारी किसी दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया। उसे 50 दिन बिस्तर पर पड़े-पड़े बिताने पड़े। खुराक अच्छी थी, अच्छी सेवा भी मिली लेकिन बन्द कमरे में घुटन भी मिली। बाहर की खुली हवा, अपने पैरों से चलने का मजा, अपने हाथों से खाने का मजा, इसकी भेंट में कमरे की घुटन में निष्क्रिय रहकर स्वादिष्ट भोजन खाना, क्या अन्तर है दोनों में, इसका उसने बखूबी अनुभव किया। अंगुलियों पर गिन-गिन कर कटने वाला एक-एक पल कितना भारी होता है और अगर ऐसी सजा किसी को जीवनभर के लिए दी जाए तब क्या होगा?

51वें दिन जब उसे व्हील चेयर पर बिठाकर बाहर लाया गया, तब सबसे पहले उसने अपना पक्षी-संग्रह देखने की इच्छा प्रकट की। उसकी पत्नी इसको पक्षी-प्रेम समझकर उसे पक्षियों के पिंजरों के पास ले आई।

पर यह क्या? उस अधिकारी ने एक-एक कर सभी पिंजरे खोल दिए और नजर भरकर उड़ते परिन्दों को देखकर बुदबुदाया, आज मैंने ढेर सारा पुण्य कमाया।

सत्य कहा गया है, बन्धन के जीवन से मुक्ति हजार गुणा बेहतर है। मुक्ति मनुष्य के सर्वांगीण विकास की पहली शर्त है और पराधीनता पतन का द्वार है। मनुष्य आज रोग-शोक, झगड़े-विवाद, जन्म-मृत्यु, अन्याय-आतंक, असमर्थता-अशान्ति आदि कलह-क्लेशों की पराधीनता में है।

जब मनुष्यात्मा सभी बन्धनों को काटकर परमधाम (ब्रह्मलोक, निर्वाणधाम, मुक्तिधाम अर्थात् आत्मा और परमात्मा का घर) में जाकर रहती है तब वह मुक्ति अर्थात् दुख से न्यारी अवस्था में होती है।

जीवनमुक्ति वह अवस्था है जिसमें तन तो है परन्तु किसी प्रकार का दुख नहीं है, हर प्रकार का सुख प्राप्त है। आत्मा की ऐसी अवस्था सतयुग (स्वर्ग) में रहती है। वहां जन्म भी गर्भमहल में होता है इसलिए दुख नहीं है और ना ही अकाले मृत्यु होती है, न वहाँ तन का रोग होता है, कोई

शत्रु भी नहीं होता इसलिए कोई अन्य भय भी नहीं है। किसी भी बुराई का बन्धन नहीं होता है। वहाँ सभी दिव्य गुणों से भरपूर देवी-देवता कहलाते हैं।

ब्रह्माकुमारी आश्रम में सात दिन का कोर्स करके सहज राजयोग द्वारा बन्धनों से मुक्ति पाने का रास्ता नि:शुल्क प्राप्त किया जा सकता है। आप अपने नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर पहुँच कर अवश्य लाभ उठायें। "अभी नहीं तो कभी नहीं।" ❖

साइबर क्राइम और कर्मों की गुह्य गति

ब्रह्माकुमार सुधीर, चण्डीगढ़

इंटरनेट के आधुनिक जमाने में साइबर क्राइम बढ़ते जा रहे हैं। घर बैठे पता चल जाता है कि हमारे बैंक-खाते से लाखों रुपये निकल गये, शेयर बाजार में लगे करोड़ों रुपये डूब गये, कम्प्यूटर हैक हो गये, वायरस डाल दिया गया, एक फोन काल आया और भारी नुकसान हो गया इत्यादि। फिर हम पुलिस को शिकायत करते हैं। हर शहर, हर राज्य में साइबर क्राइम नियन्त्रक शाखायें खुल रही हैं। जब कम्प्यूटर से क्रांति आयी थी और सर्व कार्यालयों का बोझ छोटे से उपकरण ने उठा लिया था तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक दिन यही आधुनिक साधन हमारे लिये चुनौती बन जायेंगे।

कर्म सिद्धांत

जब किसी सामान्य व्यक्ति के साथ ऐसी कोई घटना घटती है तो वो ईश्वर से सवाल करता है कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? मैंने तो बहुत मेहनत से धन अर्जित किया था, मेरा वो धन चोरी क्यों हो गया? ऐसे अपराध के विरुद्ध कार्यवाही में पुलिस, कोर्ट आदि के खर्चे भी उठाने पड़ते हैं। द्वापरयुग और कलियुग में हम सभी मनुष्य आत्माओं से प्रत्येक जन्म में अनेक पाप कर्म होते रहे हैं। इन 2500 वर्षों में अनेक मनुष्यों से धन का लेनदेन करते हमारे अनेक हिसाब-किताब भी बने हैं जो फिर चुक्ता भी करने हैं। ईश्वरीय ज्ञान के आधार से हमें ज्ञात हुआ है कि कलियुग में यह हमारा अंतिम जन्म है, फिर सतयुग अवश्य आयेगा और वहाँ आत्मा कर्म-बन्धन मुक्त होकर जायेगी। पिछले 63 जन्मों (द्वापर और कलियुग) में निर्मित कर्म-खाते के बचे हुए हिसाब को इस एक जन्म में चुक्ता करने के लिए कई बार बड़े झटके भी सहन करने पड़ सकते हैं। मान लीजिए, किसी व्यक्ति से हमने सन् 1850 में कुछ रुपये उधार लिये और उन्हें चुक्ता नहीं कर पाये। अब सन् 2017 में ब्याज सहित वो कितना हो जाएगा? जब अचानक पता चलता है कि किसी ने बैंक से 10 लाख रुपये निकाल लिये तो बड़ा सदमा लगता है। हो सकता है यह वही 10 रुपये वाला हिसाब चुक्ता हो रहा हो। सन् 1850 में 10 रुपये वापिस न मिलने पर उस व्यक्ति को भी उतना ही कष्ट हुआ होगा जितना कि आज हमें 10 लाख रुपये निकलने पर हो रहा है।

सकारात्मक चिंतन करें

फिर भी पुलिस में शिकायत दर्ज करानी जरूरी है। यदि भाग्य में होगा तो धन वापिस आ जाएगा, अगर नहीं आता है तो कर्मों का हिसाब-किताब समझें। कर्मों की गति अति गुह्य है। यदि हम किसी को गाली देते हैं, गलत बोलते हैं तो उसका भी बोझ चढ़ता है और फिर वापिस भी सुनना पड़ता है। इन सबसे बचने के लिए निरंतर शिवबाबा की याद में रहना, सत्कर्म करना, सहन करना, धैर्य रखना, दुआयें देते रहना एवं सदा सकारात्मक चिंतन करना अति आवश्यक है ताकि हमें दुआयें मिलती रहें और पाप कर्म विनाश होते रहें। इससे हमारी सहजयोगी जीवनशैली बन जायेगी और हम ब्रह्मा बाबा की तरह निरन्तर खुशी में रह सकेंगे। ❖

तेरी मुरली में है अद्भुत जादू

ब्रह्माकुमार (प्रोफेसर) अजीत राणा, रोहतक (हरियाणा)

बात सन् 2010 की है, एक दिन मैंने अपने लौकिक बड़े भाई (राजपाल) से कहा कि अब आप शराब पीना बन्द करो क्योंकि इसका आपकी सेहत तथा परिवार के सदस्यों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इस पर उसने कहा कि 40 वर्षों से फौज में पड़ी पक्की आदत को कैसे छोड़ दूँ, यह असम्भव का भी असम्भव है, यह हो नहीं सकता। आगे उसने मुझे कहा, इस बात को छोड़कर और कोई भी बात कह दो, मान लूँगा परन्तु यह नहीं।

मौके का फायदा उठाते हुए मैंने तुरन्त कहा, ठीक है, आप ऐसा करो कि शराब पीते रहो लेकिन कुछ दूरी पर चल रही ब्रह्माकुमारीज की क्लास में हर रोज जाकर बैठा करो। उसने कहा, ठीक है, यह मैं कर दूँगा। मन-मन में मैंने बापदादा को कहा कि अब आप सम्भालो।

इसके बाद वह प्रतिदिन नियम से क्लास में जाने लगा। जब ज्ञान-मुरली सुनते-सुनते डेढ़ महीना बीत गया तो उसने स्वयं ही शराब पीना छोड़ दिया। ज्ञान-अमृत निरन्तर पीते रहने से शराब रूपी विष अन्दर से निकल गया। यह मुरली का जादू था जिसने असम्भव को सम्भव कर डाला।

यह जानकर हम सब परिवार वालों को बड़ी खुशी हुई परन्तु उसने कहा कि शराब छोड़ने से मुझे एक बड़ा नुकसान हो गया। हमने आश्चर्य से पूछा, वह क्या? उसने बताया कि उसके साथियों ने आना बन्द कर दिया है जो उसको अच्छा नहीं लग रहा है। मैंने कहा, वास्तव में वे आपके साथी नहीं थे, शराब के साथी थे। उसने कहा कि हाँ, यह ठीक है।

कुछ दिन बाद मैंने भाई को कहा कि आपके मकान में पांच बड़े-बड़े अच्छे कमरे हैं। क्यों नहीं एक कमरे में ब्रह्माकुमारीज की पाठशाला खोल दें? इस पर उसने कहा कि नहीं, यह नहीं हो सकता, लोग क्या कहेंगे? मैंने प्रश्न किया, क्यों भाई, क्या यह गन्दा कार्य है जो हम लोगों से शर्म करें या डरें? उसने जवाब दिया, कार्य तो अच्छा है। मैंने कहा, फिर अच्छे कार्य में शर्म या डर कैसा? यह बात उसकी समझ में आ गई। इसके बाद उसके घर के एक कमरे में सच्ची गीता पाठशाला शुरू हो गई। कुछ दिन बाद भाई ने मुझे कहा, यह काम तो तूने अच्छा करवा दिया। मैंने मन ही मन बापदादा का धन्यवाद किया। यह पाठशाला आज भी घरवालों तथा आस-पड़ोस की आत्माओं की ज्ञान-जिज्ञासा सन्तुष्ट कर रही है।

इस प्रकार मेरा लौकिक भाई बुराइयों को त्याग कर बापदादा के विश्वकल्याण के कार्य में सहयोगी बन गया। क्या यह बाबा की मुरली का अद्भुत जादू नहीं है? बाबा की वह बात भी सम्पन्न हुई कि चैरिटी (परोपकार) घर से शुरू होती है। मेरे अपने बाबा के भवन में भी आठ वर्षों से यह पाठशाला सुबह-शाम दोनों वक्त चल रही है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जब बाबा का ज्ञान हर रोज अन्दर जाता है तो विचारों का शुद्धिकरण होने लगता है तथा मनुष्य की बुरी आदतें व विकारों रूपी जहर धीरे-धीरे निकलता जाता है। मुरली में ही शिव परमात्मा विकारों की वास्तविकता बताते रहते हैं कि बच्चे, ये ही तुम्हारे दुख के कारण हैं। मुरली को पढ़ते व सुनते रहने से बाबा की याद के विभिन्न तरीके सीखने को मिलते रहते हैं जिससे बाबा की याद बढ़ती जाती है और मनुष्य सहज ही बुराइयों से मुक्त हो, राज्यपद का अधिकारी बन जाता है।

❖

ज्वालास्वरूप योग अवस्था का आधार

पूर्णविराम

ब्रह्माकुमार विनायक, पाण्डव भवन (आबू पर्वत)

राजयोगाभ्यास की परमोच्च अवस्था है ज्वालास्वरूप स्थिति। वास्तव में यह ज्वाला नहीं बल्कि परम शान्ति और शीतलता की अवस्था है लेकिन जैसे ज्वालामुखी, पत्थर को भी पिघला देता है वैसे ही आत्मा के अति कठोर से कठोर आसुरी संस्कारों को भी दग्ध करने की प्रचंड शक्ति इस अवस्था में होने के कारण इसे ज्वाला की उपमा दी गई है। स्वयं को आत्मा ज्योतिबिन्दु समझकर, ज्ञान, गुण, शक्तियों के सागर ज्योतिबिंदु परमात्मा शिव पिता को ज्योतिलोक अर्थात् परमधाम में मन-बुद्धि से याद करना, यह है बिंदुरूप स्थिति। इस स्थिति में एकाग्रता के साथ-साथ निरंतरता को जब कायम रखेंगे तब स्वीट साइलेन्स या ज्वालास्वरूप अवस्था में प्रवेश करेंगे जिससे पाप भस्म होंगे।

जैसे नाम वैसे क्या यह अभ्यास भी कठिन है?

जैसे नाम वैसे क्या यह अभ्यास भी कठिन है? बिल्कुल ही नहीं। कठिनाई तब है जब जिम्मेवारी स्वयं पर हो। अगर हमारी जिम्मेवारी कोई और उठाए तो फिर क्या कठिन है? समझो, एक बच्चा काफी देर तक बाहर खेलकर आया है, बदन पर मिट्टी जमी हुई है, कपड़े मैले हुए हैं, पैरों में कांटे चुभे हैं, ऐसे में उसका फिर से सुन्दर बनना कठिन है क्या? नहीं! वह आकर अपनी माँ के सामने बैठता है। माँ उसको प्यार से गोद में बिठाती है, चुभे हुए कांटे निकालकर नहलाती है, तेल मालिश कर सुगंधित द्रव्य लगाती है और थोड़े ही समय में विकृत रूप को परी जैसा बना देती है। वैसे ही योग में हमें केवल इतना ही करना है कि प्रेम के सागर, बिन्दुरूप शिवपिता के सामने बिन्दुरूप बन बैठना है। शिव पिता, हमारे संस्कारों में लिपटी हुई अशुद्धि अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वशीभूत होकर किये हुए विकर्मों के अभिलेख को अपनी शक्ति से भस्म कर देते हैं जैसे कि अग्नि, सोने में मिश्रित अशुद्धता को जला देती है। जैसे चुंबक के सानिध्य में रखा लोहा भी चुंबक का गुण धारण कर लेता है वैसे ही ज्ञान, गुण, शक्तियों के सागर शिवबाबा अपनी दिव्यता हम आत्माओं में भर देते हैं। यहाँ कठिनाई की बात ही कहाँ है?

अगर भगवान ही पाप भस्म करते हैं तो हमारा पुरुषार्थ ही क्या रहा?

हमारा पुरुषार्थ है मन और बुद्धि को स्थिर रखना। अगर बच्चा माँ के सामने स्थिर होकर न बैठे, चंचलता के वश यहाँ-वहाँ भागे तो माँ मनपसंद सफाई और शृंगार नहीं कर सकती। वैसे ही योगाभ्यास के समय मन-बुद्धि अगर चंचल हैं, बिन्दुरूप अवस्था पर दीर्घ समय तक स्थित नहीं हो पाते हैं तो संस्कार परिवर्तन की प्रक्रिया भी यथार्थ नहीं रहेगी, जैसे अधूरी सफाई, अधूरा शृंगार।

एकाग्रता या स्थिरता को कैसे अपनाएँ?

इसका साधन है पूर्णविराम। जैसे वाहन में सबसे मुख्य पुर्जा होता है उसका ब्रेक। वाहन चलाते हुए ब्रेक ठीक नहीं लगे तो परिणाम है दुर्घटना! साधना के मार्ग पर भी संकल्पों को ब्रेक या पूर्णविराम लगाने का अभ्यास कमजोर है तो संस्कार परिवर्तन के पुरुषार्थ में असफल होना निश्चित है। योगाभ्यास में सबसे अधिक विघ्न व्यर्थ संकल्पों का पड़ता है जो बुद्धि को एकाग्र होने नहीं देते हैं। व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति के कारण हैं अयथार्थ मनोवृत्ति, बोल और कर्म। इन तीनों बातों से मुक्त होने के लिए दिनचर्या में पूर्णविराम का प्रयोग करना अति आवश्यक है।

किन मुख्य बातों पर पूर्णविराम लगाएँ?

दुख देना और लेना : मन-वचन-कर्म से किसी को दुख

देना, इससे हीन कर्म दूसरा नहीं है। जैसे ही संकल्प से, बोल से या कर्म से हम दुख देते हैं तो तुरंत ही हम दो बातों से श्रापित हो जाते हैं। एक, हमारे प्रति उस आत्मा के बद्दुआ के संकल्पों से, दूसरा, दुख देने का जो पापकर्म हुआ उसका फल भी श्राप में परिवर्तित हो जाता है। दुख लेना अर्थात् स्वयं ही स्वयं को श्रापित करना। मन-मुटाव, वैर-विरोध, ईर्ष्या-द्वेष, लगाव-झुकाव-टकराव, जिद्द और सिद्ध करने की आदत, इन सारी बातों का परिणाम है दुख देना और लेना। इन के प्रभाव से मन-बुद्धि एकाग्र होने के बजाय भ्रष्ट बनते जाते हैं जिससे फिर योगाभ्यास की गहराई में जाना असंभव है। इसलिए ऐसे संकल्प, बोल और कर्म को उत्पन्न होने से पहले ही रोक देना है।

परचिंतन: जैसे सूर्य और पृथ्वी के बीच चंद्रमा आ गया तो ग्रहण लग जाता है, वैसे ही परमात्मा के रूप, गुण और कर्त्तव्य को देखने के बाजए अन्य आत्माओं की कमी-कमजोरी देखने से मन-बुद्धि को (ज्ञानसूर्य की रोशनी से वंचित करने वाला) ग्रहण लग जाता है। ग्रहण को विघ्नसूचक और अशुभ माना जाता है। जैसे, परीक्षा में बैठा परीक्षार्थी, अपनी पत्रिका छोड़ औरों की पत्रिका पर नजर घुमाये तो परीक्षा से बहिष्कृत हो जाता है, वैसे ही परचिंतन भी साधक को साधना के मार्ग से हटाकर कांटों के ऐसे जंगल में ले जाता है जिससे मंजिल की स्मृति प्रायलोप हो जाती है। परचिंतन शुरू होने से पहले ही उसको बिंदी लगा देने से ग्रहण से बच जाएँगे।

बीती हुई बातें: बीती बातों को याद करना अर्थात् मृत शरीर को जमीन से उखाड़ लेना या भूत का आह्वान करना। जैसे भूत से पीड़ित व्यक्ति परेशान और दुखी रहता है, वैसे ही भूतकाल की बातों की स्मृति में फँसा हुआ व्यक्ति भी अवास्तविक दुनिया में खोया रहता है। क्या, क्यों, कैसे, ऐसे भी होता है क्या? वैसे होना चाहिए था – ये प्रश्नों रूपी भूत मन-बुद्धि को वश में लेकर उसका एकाग्र होना असंभव कर देते हैं। पुरानी बातों को तो बिंदी लगानी ही है लेकिन हर पल जो बीत रहा है, उसको भी तुरंत पूर्णविराम लगाकर आगे बढ़ना, यह है शक्तिशाली पुरुषार्थ। पिछले क्षण की अशुभ और अयथार्थ बातें अगले क्षण याद न आएँ।

संगदोष: चूहे, बंदर आदि पकड़ने के लिए पिंजरे रखे जाते हैं जिनमें प्रलोभन के लिए खाद्य रखा जाता है। अंदर आया और फँसा। संगदोष भी एक पिंजरा है जहाँ अल्पकाल के भ्रामक आनंद का प्रलोभन रहता है। यदि दूरांदेशी बनकर बिंदी नहीं लगाएंगे तो लक्ष्य को भूल मिथ्या मार्ग पर भटकना निश्चित है, जहाँ स्वयं के साथ-साथ दूसरों का भी पतन है।

मनोरंजन के साधन: आजकल मनोरंजन के साधन जैसे कि टी.वी., मोबाइल, इन्टरनेट आदि के नकारात्मक प्रभाव बहुमुखी हैं। ये अमूल्य समय को नष्ट कर देते हैं, बार-बार देखने का, सुनने का आकर्षण बना देते हैं और रंग-बिरंगे आकर्षणों में मन-बुद्धि को आसक्त कर देते हैं। देखी हुई, सुनी हुई बातें बार-बार याद आने के कारण मन की एकाग्रता या स्थिरता नहीं रहेगी।

तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आदत: कोई घटना घटती है तो विवेक को जागृत करने के बजाय तुरंत ही कटु प्रतिक्रिया व्यक्त करने का स्वभाव एकाग्रता में बहुत बाधा डालता है। संकल्पों की गति में तीव्रता और भावनाओं में आवेश, ये दोनों हमें बहिर्मुखता में ले जाते हैं। साधना के लिए चाहिए अंतर्मुखता जहाँ संकल्पों की गति मंद रहती है और बिंदी लगाना आसान है।

इच्छा भरी जीभ: मन-बुद्धि को चंचल बनाकर साधक को साधना के बदले पदार्थों में लपेट देता है स्वाद का आकर्षण। पदार्थ मिला तो आसक्ति में फँसे, नहीं मिला तो दुख में डूबे। आसक्ति और दुख – ये दोनों एकाग्रता के शत्रु हैं। शरीर को चलाने के लिए जो भी मिला उसको अनासक्त भाव से परमात्मा की याद में स्वीकार करना ही बिंदी लगाने की युक्ति है।

सामान्यत: हम पूरे दिन इन सब बातों को बिंदी लगाने की कोशिश नहीं करते परन्तु योगाभ्यास के लिए जब बैठते

हैं तब बल प्रयोग से संकल्पों को रोकने का प्रयत्न करते हैं लेकिन पहाड़ी इलाके में वाहन चलाते हुए चालक यह नहीं कह सकता कि ऊपर से नीचे पहुँचने तक मैं ब्रेक नहीं लगाऊँगा, ठिकाने पर पहुँचने के बाद एक साथ ही लगा दूँगा। नहीं। विधि यह है कि पहाड़ की चोटी से लेकर उतराई तक हर मोड़ पर ब्रेक लगाते आएँगे तब ही वाहन सुरक्षित ठिकाने पर पहुँचेगा। साधक भी दिनभर व्यर्थ के तूफानों में उलझे रहें और योगाभ्यास के समय बिंदी लगाने का प्रयत्न करें तो जो समय अतींद्रिय सुख की अनुभूति में सफल होना था वह बिंदी लगाने के युद्ध में ही बीत जाएगा। पूर्णविराम का अभ्यास सुबह आँखें खुलते ही आरंभ हो। दिनचर्या के कदम-कदम पर बुद्धि के हाथ में ब्रेक हो। जैसे स्नान, भोजन, निद्रा आदि दिनचर्या के अनिवार्य घटक हैं वैसे ही इस अभ्यास को भी एक जीवन शैली के रूप में निरंतर प्रयोग में लाएँगे तब यह एक ढाल के रूप में, विकारी एवं व्यर्थ बातों के प्रहार से हमारी रक्षा करेगा और बैठते ही एकाग्र होने में मदद करेगा।

कई बार व्यर्थ संकल्पों का तूफान इतना तेज होता है कि बिंदी लगाने के तीव्र प्रयत्न के बाद भी सफलता नहीं मिलती है। तब ईश्वरीय ज्ञान के चार महावाक्यों को प्रयोग में लाएँ –

1. सुख और दुख का जो मैं सामना कर रहा हूँ, यह मेरे ही पूर्वजन्मों के कर्मों का फल है। इसलिए मैं किसी को भी मेरे दुख के लिए दोषी नहीं ठहरा सकता हूँ। मेरे कर्मफल को राजयोगाभ्यास से मुझे ही दग्ध करना है।

2. इस सृष्टिनाटक में हर एक आत्मा को अपनी-अपनी भूमिका मिली हुई है। नाटक में किसी भी अभिनेता के अभिनय के बारे में, दूसरा कोई अभिनेता कोई संकल्प नहीं चलाता है बल्कि अपने अभिनय को सदा श्रेष्ठ बनाकर रखता है। अत: स्वदर्शन चक्रधारी बनना है अर्थात् अपनी भूमिका को श्रेष्ठ बनाना है।

3. यह बना-बनाया सृष्टिनाटक है, नया कुछ नहीं है। आवेश, आश्चर्य, उद्विग्नता को बिंदी लगाकर साक्षीपन और निमित्त भाव को अपनाना है।

4. अब नहीं तो कभी भी नहीं। स्वयं के आसुरी संस्कारों को दैवी संस्कारों में परिवर्तन करने की सुहावनी घड़ी 'अब' है। इस 'अब' को अगर व्यर्थ में गवाँऊँगा तो वह बीता हुआ समय वापस कभी नहीं मिलेगा। अगर मैं पूर्णविराम नहीं लगाऊँगा तो हानि मुझे ही होगी। पश्चाताप की सजा मुझे ही भोगनी होगी इसलिए अब मुझे बिंदी लगानी ही है।

जैसे-जैसे पूर्णविराम लगाने में प्रवीणता पाते जाएँगे, संकल्पों का घेराव कम होता जाएगा। इससे योगाभ्यास में एकाग्र मन-बुद्धि से सर्वशक्तिवान शिवपिता को निरंतर निहारना या ज्वालास्वरूप अवस्था में दीर्घ समय तक स्थित होना सहज हो जाएगा। हमें यह स्पष्ट अनुभव होगा कि शिवपिता हमारे जहरीले अर्थात् विकारी संस्कारों को भस्म कर रहे हैं और दिव्य गुणों से हमारा श्रृंगार कर रहे हैं। ❖

श्रद्धांजलि

आदर्श शिक्षाविद्, हिन्दी एवं ब्रजभाषा के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार, कवि एवं गीतकार ब्र.कु.गोपाल प्रसाद मुद्‌गल ने दिनांक 20 अगस्त, 2017 को जयपुर के एक निजी अस्पताल में चिकित्सा के दौरान अपना पुराना शरीर छोड़ प्यारे बाप-दादा की गोद ली। आपका लौकिक जन्म 2 जुलाई, 1931 को हुआ था।

आप सन् 2000 में भरतपुर में ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आये। आपने आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा विश्व परिवर्तन की ईश्वरीय योजना के लिए सैकड़ों गीत, दोहे एवं प्रभावशाली स्लोगन्स की रचना की। आप सन् 1991 से 1997 तक दो बार 'राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी' के सचिव रहे तथा सन् 1997 से 2000 तक अध्यक्ष रहे। आपने डेढ़ दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं। आपने सहस्त्रों कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों में गीत एवं कविताओं की प्रस्तुति दी।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी भ्राता गोपाल प्रसाद मुद्‌गल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित है।

क्षमाशीलता

प्रो.आर.बी.एल.गर्ग, भरतपुर (राजस्थान)

ऐसा व्यक्ति जिसने हमें क्षति पहुँचायी, उसके प्रति स्वेच्छा से क्षमा का निर्णय ही क्षमाशीलता है। नेलसन मण्डेला ने 27 वर्ष दक्षिण अफ्रीका की जेल में बिताये। बाहर आने के बाद उन्होंने स्वयं के प्रति दुर्भावना रखने और क्षति पहुँचाने वालों को क्षमा कर दिया। अन्ततोगत्वा वे वहाँ के राष्ट्रपति भी बने। क्षमाशीलता स्वयं को दिया जाने वाला एक उपहार है जो प्रतिशोध के परित्याग से प्राप्त तनावमुक्ति का आनन्द देता है। यह इतना सहज नहीं लेकिन यह सम्भव अवश्य है। क्षमा करना स्वयं को बन्धनमुक्त करने के समान है। अगर हम क्षमा नहीं करते तो प्रतिशोध के कुचक्र में फँसकर स्वयं को कैदी बनाकर अपना अहित करते हैं।

बलवान की निशानी है क्षमाशीलता

प्रख्यात दार्शनिक हैरिट नेल्सन (Harrit Nelson) कहते हैं, "उन सभी को क्षमा कर दो जिन्होंने आपको तकलीफ पहुँचाई है। यह निर्णय उनके लिए ही नहीं, आपके कल्याण के लिये भी है।" पोप जॉन पॉल द्वितीय को जान से मारने के लिये सन् 1981 में एम.अली नामक एक व्यक्ति ने 4 बार फायर किये। हॉस्पीटल से बाहर आने के बाद वे अली से जेल में मिले और उसे क्षमा कर दिया। कहा गया है कि बेवकूफ न तो कभी क्षमा करते हैं और न ही कभी भूलते हैं। बुद्धिमान क्षमा भी करते हैं और भूल भी जाते हैं। माफी मांगने वाला व्यक्ति शक्तिशाली होता है लेकिन माफी देने वाला व्यक्ति बहुत बलवान होता है। महात्मा गांधी ने कहा है, "कमजोर व्यक्ति कभी माफ नहीं करता, क्षमाशीलता तो बलवान की निशानी है।"

महात्मा की असामान्य सोच

आज क्षमाशीलता को सामाजिक सम्बन्धों से बाहर निकालकर फेंक दिया गया है जिसके कारण द्वेष, घृणा, अहंकार, तनाव आदि नकारात्मक संवेग अधिक पुष्ट हो रहे हैं, फलत: जीवन की गुणवत्ता का क्षय हो रहा है। महात्मा बुद्ध नदी के किनारे बैठे तप में लीन थे तब एक अशिष्ट व्यक्ति ने उनके मुँह पर थूक दिया। क्रोधित शिष्यों ने उस व्यक्ति को दण्डित करने के लिए महात्मा से आज्ञा मांगी जिसे उन्होंने नकार दिया। अपना चेहरा साफ करते हुए बुद्ध ने उस व्यक्ति से कहा, "यदि तुम्हें पुन: थूकने की आवश्यकता हो तो बिना झिझक मेरे मुँह पर थूकने चले आना।" यह असामान्य सोच सामान्य व्यक्ति की सोच के बाहर है। ऑस्कर वाइल्ड कहते हैं कि "अपने दुश्मन को क्षमा कर दो, इससे अधिक उसे कुछ भी परेशान नहीं करेगा।"

क्षमाशील कैसे बनें?

'नाराजगी पर नियंत्रण' जहर पीने जैसा लगता है लेकिन इससे बुरा करने वाले का मनोबल क्षीण होता है। उसके लिए सबसे अधिक कष्टकारी है, जब हम उसकी बुराई का उत्तर अच्छाई से दें। उसे महसूस करा दें कि जो मुश्किलें उसने खड़ी की हैं वे प्रभावी नहीं हैं। बुराई को अच्छाई में बदल डालें और इसका निरन्तर अभ्यास करते रहें। मिर्जा गालिब कहते हैं–

"कुछ यूँ हमने जिंदगी को आसां कर लिया;
किसी से माफी मांग ली, किसी को माफ कर दिया।।"

क्षमाशीलता के आचरण से हम सबके लिए अद्भुत रोल मॉडल बन सकते हैं। हम समझ लें कि द्वन्द्व एवं बदले की भावना निरर्थक ही है क्योंकि इससे किसी को लाभ नहीं पहुँचता। क्षमा भूतकाल को तो नहीं बदलती पर भविष्य को बेहतर और आसान अवश्य बना देती है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail: gyanamritpatrika@bkivv.org**
Website: gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**

1. **ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब.कु.मोहन भाई पटेल, ब.कु.गीता बहन, उद्योगपति भ्राता रुचिर पारेख, ब.कु.योगिनी बहन, हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ.विवेक मेहन, ब.कु.मदनलाल शर्मा तथा ब.कु.सुरेन्द्र भाई। **2.जयपुर-** ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा निर्मित 'मनमोहिनीवन' तथा 'आनन्द सरोवर' के लिए ग्रीन बिल्डिंग का सम्मान ब.कु.भरत भाई को प्रदान करते हुए इंडियन ग्रीन बिल्डिंग रेसिडेन्सियल सोसायटी की उपाध्यक्षा बहन माला सिंह। साथ में हैं इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउन्सिल के अध्यक्ष भ्राता वी.सुरेश तथा अन्य। **3.लखनऊ (गोमतीनगर)-** '3 डी हेल्थ केयर फॉर हेल्दी माइंड, हार्ट एण्ड बॉडी' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता सिद्धार्थ नाथ सिंह, डॉ. सतीश गुप्ता तथा अन्य। **4.जयपुर (राजापार्क)-** किसान सशक्तिकरण अभियान के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के कृषि मंत्री भ्राता प्रभु लाल सैनी, 'आत्मा कृषि योजना' के निदेशक भ्राता दयाल सिंह चौधरी, ब.कु.सरला बहन तथा ब.कु.पूनम बहन। **5.नैनीताल-** उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता सर्वेश कुमार गुप्ता, चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए। ब.कु.वीना बहन तथा ब.कु.नीलम बहन साथ में हैं। **6.मण्डी धनौरा-** उ.प्र.के युवा तथा खेल विभाग के कैबिनेट मंत्री भ्राता चेतन चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.मनीषा बहन तथा ब.कु.विमल बहन। **7.पानीपत-** 'अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस' कार्यक्रम में हरियाणा के श्रम मंत्री भ्राता नायब सैनी सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं ब.कु.डॉ.महेश हेमाद्री, भाजपा के अध्यक्ष भ्राता प्रमोद विज, ब.कु.भारत भूषण भाई, ब.कु.सरला बहन तथा अन्य। **8.नोयडा-** ब.कु.बिन्नी बहन को महात्मा गांधी सेवा मैडल प्रदान करने के बाद गांधी ग्लोबल फेमिली के उपाध्यक्ष पद्मश्री एस.पी.वर्मा, डॉ.डबल्यू डेनिस तथा अन्य समूह चित्र में।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : November, 2017.

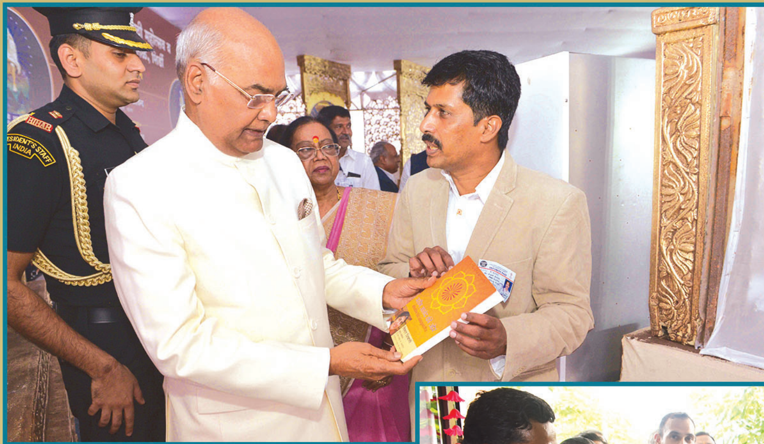

अहमदनगर- भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता रामनाथ कोविंद जी को उनके जन्म दिवस पर ईश्वरीय साहित्य देकर शुभकामना देते हुए ब्र.कु.डॉ.दीपक हरके।

ओमशान्ति नगर (काला मगरा) : न्यू ज्ञानामृत भवन (प्रिंटिंग प्रैस) का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, ब्र.कु. हंसा बहन, ब्र.कु. मृत्युन्जय भाई, ब्र.कु.भूपाल भाई, ब्र.कु. भरत भाई तथा अन्य।

कुरुक्षेत्र (विश्व शान्ति धाम)- 'शाश्वत यौगिक खेती' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत, ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.राज बहन तथा ब्र.कु.सरोज बहन।

शान्तिवन (आबू रोड)- शिक्षाविद् सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के श्रम, कौशल एवं नियोजन मंत्री भ्राता जसवंत सिंह यादव, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, डॉ.अनिल सहस्रबुद्धे, डॉ.हरीश शुक्ला, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा अन्य।